बड़ अजगुत देखल...



शरदिन्दु चौधरी

बड़ अजगुत देखल...

(व्यंग्य-संग्रह)

शरदिन्दु चौधरी

प्रकाशक एवं मुद्रक :
शेखर प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना - 24

आवरण एवं शब्द संयोजन
अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष - नवम्बर - 2005

मूल्य : 40/- टाका

BAR AJGOOT DEKHAL (SATIRE)
BY
SHARDINDU CHAUDHARY

मुक्ति पयबाक प्रयत्न

- 'जँ हम जनितहुँ' जे एहि पृथ्वीपर नीकसँ बेसी बेजायक सामना करय पड़त; सोझमतिया लोकसँ बेसी बहुरूपिया सभसँ पाला पड़त; नीक बातसँ बेसी अधलाह बात सुनय पड़त तँ बोध होइते एहिसभसँ मुक्ति पयबाक प्रयत्न करितहुँ।
- 'जँ हम जनितहुँ' जे नीक भविष्यक लेल कयल गेल प्रयत्नसँ खाधिये दिस लुढ़कल जायब; अपन अरिजन-परिजनक सुख-शान्ति लेल बनाओल घर-द्वारिक निर्माणसँ मकड़ाक जाल सदृश स्वयं ओहिमे फँसिते जायब; अपन अड़ोसी-पड़ोसीक सुख-दुःखमे संग रहबाक संकल्पसँ हुनकहि नजरिमे खसि पड़ब तँ सामाजिक प्राणी बनबासँ पहिने संन्यासक मार्ग दिस बढ़ि जइतहुँ।
- 'जँ हम जनितहुँ' जे धर्मक मार्गपर चलबा सँ अधर्मीक कर्म-कुकर्ममे लिप्त भऽ जायब; सेवाक व्रत लेलाक बाद राजनीतिमे प्रवेश करतहि 'परमुंडे फलाहार'क अभ्यासी भऽ जायब; देशप्रेमी बनबाक पाठ पढ़लाक बादो देशद्रोहीक आचरण करय लागब तँ स्वदेसी पोषक नहि होइतहुँ।
- 'जँ हम जनितहुँ' जे मिथिला हमर जन्मभूमि अछि; मैथिली हमर मातृभाषा अछि; मैथिल हमर अपन भाइ-बन्धु छथि तँ एहि सपनाकेँ साकार करबा लेल मिथिलासँ सुदूर कतहु जा कऽ एसकरमे एहि भावनाक आनन्द लेबाक प्रयत्न करितहुँ।

★ ★ ★ ★ ★ ★

- हम सभ चन्द्रमाकेँ पूजैत छलहुँ, हुनका आगाँ माथ झुकबैत छलहुँ, आइ ओतऽ पयर राखि चुकल छी।
- माता-पिताकेँ देव सदृश मानैत छलहुँ, हुनक आदेशकेँ शिरोधार्य करैत छलहुँ; आइ हुनका लोकनिकेँ घरक कूड़ा-कर्कट जकाँ कात-करोटमे फेकबा लेल उद्यत छी।
- गामघर, शहर-राजधानी सभठाम सभजातिक लोक हमर बन्धु बांधव छल, हम सभ मीलि एक-दोसराक सुख-दुःखमे संग रहैत छलहुँ; आइ हमरा सभ एक दोसराक रक्त पीबा लेल व्याकुल छी।

- राजनीति मानव सेवा, देश सेवाक पाठ पढ़बैत छल, हम राजनीतिज्ञक आदर-सम्मान करैत छलहुँ; आइ राजनीतिज्ञ देशक हृदयकेँ अपन स्वार्थलोलुपताक कारणे तार-तार कऽ देने छथि आ हमरालोकनि विष्ठोसँ बेसी हुनकासँ घृणा करैत छियनि।

★ ★ ★ ★ ★ ★

- हम आ अहाँ अपन आँखिसँ सभ किछु देखैत छी, सहैत छी मुदा बजैत नहि छी।
- हम आ अहाँ सभ बात बजैत छी, सुनैत छी मुदा ओहिपर अमल करबाक कष्ट नहि करैत छी।
- हम आ अहाँ अपन अधिकार आ कर्त्तव्यक बात करैत छी मुदा अधिकार लेल लड़बा काल अपन कर्त्तव्यकेँ बिसरि जाइत छी।
- हम आ अहाँ सभ बात जनैत छी, जे करैत छी जे सहज लगैत अछि मुदा जे नहि कऽ पबैत छी से अजगुत लगैत अछि।

  हम जे नहि कऽ पौलहुँ, जे नहि सोचि पौलहुँ मुदा देखबामे आयल— सैह अछि— बड़ अजगुत देखलमे। भऽ सकैछ अहाँ कयने होइ, सोचने होइ।
- ई ने हास्य अछि, ने व्यंग्य अछि, हमर कहबाक एकटा ढंग अछि ?

विजयादशमी

12.10.2005

—शरदिन्दु चौधरी

प्र

शे

इ

©

प्र

—

विषय-क्रम

जनहित

करिया कक्काक दलानपर बेस लोक जुटि गेल छल। सभक ठोरपर एक्के व्यक्तिक चर्चा रहैक-संतोष झाक। कोना बाढ़ि सहाय्य-कार्यमे ओ अपन पैठ बनौलक ? कोना अधिकारी-पदाधिकारीसँ सांठ-गांठ कयलक ? कोना नेता सभकेँ लूट-योजनामे शामिल कयलक आ कोना डी.एम-कलक्टर सभकेँ पटिया कऽ दस-बीस करोड़क मालिक बनि मठोमाठ भऽ गेल ?'

उपस्थित लोकमे बेसी युवके छल। क्यो लखनौरक छल तँ क्यो कैथिनियांक। क्यो मधेपुरक छल तँ क्यो संतोषक पड़ोसी सांगीक। बेसी युवक तामसे भेर भेल एहि व्योंतमे छल जे संतोषबाकेँ तेना ने फंसाओल जाय जे ओ सभ तहिआयल टाका बोकरि दिअय। आखिर कोना ओकरा साधंस भेलैक जे बाढ़ि राहतक करोड़ो टाका मारि लेलक आ हमरा सभ बालु फंकैत, पानि पीबैत रहि गेलहुँ। बेसी युवकक उक्ति ई रहैक जे जखन ओ घोटालाक घेरामे आबिये गेल अछि तँ किएक ने ओकरा हमरा सभ आर लेबझा दिऐक जे सार तरफड़ा कऽ ओहिमे परबा जकाँ दम तोड़ि देअय।

करिया कक्का बुझि रहल छलाह जे आइ अगत्ती सभ मानत नहि तेँ शर्बतक इन्तजाम करय आंगन चलि गेल छलाह। एमहर दलानपर बुमकार छोड़ैत एकसँ एक गुलंजर छोड़ल जा रहल छल। अन्तमे सभ एक बातपर गोलबंद भऽ गेल जे हम सभ एहि घोटालाक विरोधमे तीन-चारि गामक लोक मीलि एकटा लोकहित याचिका कोर्टमे दायर कऽ दी जाहिसँ संतोष कहियो नहि उबरि सकय।

आब बस करिया कक्काक प्रतीक्षा छल आँगनसँ अयबाक। ओ औताह आ हुनक स्वीकृतिक मोहर लऽ एहि काजक श्री गणेश कऽ देल जाय।

किछुए क्षणमे आगाँ-आगाँ करिया कक्का आ पाछां- पाछां बंगट डोलमे शर्बत लेने दलानपर उपस्थित भेलाह। हुनका चौकीपर बैसिते दुखमोचन कड़गर तीर मारलक-

'करिया कक्का अहाँ शर्बतक सरंजाममे लागल छी आ एँहिठाम संतोषबाक करनीसँ लोकक धुआ धू-धू जरि रहल छैक।'

'हौ, तेँ ने हम शर्बतक सरंजाममे लगि गेलहुँ। पहिने शर्बत पीबैत जाह आ तखन ठंढ़ा दिमागसँ सोचह। गरमेने तँ अपने जरि जयबह तँ करबऽ की ?- करिया कक्का मुस्कुराइत जबाब देलनि।

बंगट तावत् गिलाशमे शर्बत ढ़ारि-ढ़ारि लोक दिस बढ़बऽ लागल छल।

फेकू फनकैत बाजि उठल- 'करिया कक्का, हम सभ निर्णय लऽ लेलहुँ अछि जे संतोषबाक विरोधमे कोर्टमे जनहित याचिका दायर करब आ ओकरा संग-संग नेता, कलक्टर, मंत्री-संत्री सभक नाकमे कौड़ी बान्हिकऽ रहब। खाली हमरा सभकेँ अहाँक स्वीकृति चाही। हम सभ चारू-पांचो गामक युवक एहि लेल तैयार छी।'

हौ, जन हेतै तखन ने हितक बात सोचबह। एखन युवक छह तेँ क्षणेमे देहमे आगि लागि जाइत छह। हमरा जेना बूढ़ हेबह तखन बुझबहक जनहितक अर्थ। पाँच गामक जुटानमे पचास गिलाश हमर शर्बत नहि सठल आ तों जनहितक बात करैत छह।'-करिया कक्का युवक सभपर बन्हन लगयबाक उद्देश्यसँ सोंटल जबाव देलनि।

'एना जुनि कहियौ कक्का, पांच पाण्डव हजारो कौरवपर भारी पड़लथिन। हम सभ तँ ओहिसँ बहुत बेसी संख्यामे छी।'-सहदेवा बाजल।

"सुनह पहिने हमर बात। हौ, तोरे क्षेत्रसँ ने विधानसभा अध्यक्ष भेल छलथुन, तोरे क्षेत्रसँ ने कैक टा केन्द्रीय मंत्री भेलथुन आ एही धरतीसँ ने राज्यपाल, मुख्यमंत्री आ मंत्री सभ भेलथुन। किएक ने तोँ सभ हुनका 'जनहित'क अर्थ बुझा सकलहुन? किएक हुनका सभक राजपाट रहैत आइयो बाढ़िमे दहाइत छह, बालू फंकैत छह आ दिल्ली, पंजाब पड़यबा लेल सदिखन फांड़ बन्हने रहैत छह। सोचह, कने सोचह।'-करिया कक्का कने दम लेलनि आ फेर शुरू भऽ गेलाह- 'हौ आब, जनहितक अर्थ बदलि गेलैए। जनहितक काज जँ तोँ सभ चाहैत छह तँ हमर बात मानह।'

'से की करिया कक्का ?' रमेसरा पूछलक।

'हौ, इलाकाक विकास आ गामघरक विकास तखन ने हेतैक जखन तोहर सभक विकास होयतह। तोरा सभकेँ रोजगार भेटतह। तों सभ कमासुत बनबह।'

'एहि राजमे अहाँकेँ ई सभ संभव बुझाइए कका ?' दिनेश टोनलक।

'किएक ने संभव छै हौ । सभ संभव छै, मुदा एहि लेल बहती गंगामे हाथ धोबऽ पड़ै छै। से तों सभ गछऽ तँ हम बतयबऽ।' करिया कक्का विहुँसैत बजलाह।

'हम सभ तँ अहींक इशारापर चलैत छी कक्का। अहाँकेँ हमरा सभ पर विश्वास नहि अछि की?' युवक टोलीक नेता हरिया बाजल।

'तँ ई सभ टाटक छोड़ऽ आ हम जे कहैत छियऽ से ध्यानसँ सुनैत जाह। देखऽ, संतोष आब जतेक ऊपर पहुँचि गेल छह ताहिसँ नीचाँ कतबो तोँ सभ उछल-कूद करबह नहि होयतह। सत्य पूछऽ तँ पहिल बेर 'घी हेरयलह कतऽ– तँ राहरिक दालिमे' वला बात ई भेलह जे अपना क्षेत्रक बाढ़ि राहतक टाका अपने घरमे हेरयलह। तेँ एहि अवसरसँ चुकह नहि। चालाकी एहीमे छह जे किछु घीवला दालि अपनो थारीमे परसयबाक ब्योंत करह।'-करिया कक्का युवक सभक जोशपर एकटा लोभक एक्का फेकलनि।

एक्का अपन कमाल देखौलक।

'बातकेँ स्पष्ट करू कक्का। साफ-साफ बुझाउ जे हम सभ की करी।' रमेशबा अगुताइत बाजि उठल।

करिया कक्का निशान सधैत बहलाह- हौ, संतोष एखन नव धनाढ्य बनल अछि। एखन ओकरा अपन मान-दान, शान-शौकतसँ जतेक प्रेम हेतैक ततेक ने कानूनक डर हेतैक आ ने पुलिसक। कानून आ पुलिसकेँ अपना वशमे कऽ सकैत अछि ओ मुदा एहि संकटक घड़ीमे हमर-तोहर प्रेम ओकरा भेटतैक से ओ सपनोमे नहि सोचि सकैत अछि। तेँ एखन जँ ओकरा कनेको अपनयबाक प्रयत्न करबह तँ ओ तोरा सभ पर ढ़रि सकैत छह। आ ओकर ढ़रब तोरा सभ लेल लाभकारी होयतह।'

करिया कक्का कनेक दम धरैत पुन: बाजि उठलाह- ओकरा दर्जनों कार-मोटर छैक, सिनेमा हॉल छैक, होटल छैक, कैक टा ने मकान-दोकान छैक। बैंकमे करोड़ो टाका जमापूँजी छैक। जँ ओ चाहतह तँ तोरामेसँ कैक गोटेकेँ रोजगार दऽ सकैत छह। क्यो ओकर ड्राइवर, क्यो ओकर अंगरक्षक, क्यो ओकर दोकानक बिक्रेता तँ क्यो ओकर कारबारमे रोजगार पाबि आगां बढ़ि सकैत छह। मुदा ई सभ तखने संभव होयतह जखन तोँ सभ ओकरा अपन बनयबाक प्रयास करह, ओ महान अछि से ओकरा देखयबाक प्रयास करह।'

करिया कक्का अपन चालिमे सफल भऽ गेल छलाह। सभक क्रोधक खौंत बिला गेल छलैक। मुदा सभक सोझां मुंह खोलबाक धृष्टता नहि करय चाहैत छल क्यो करिया कक्का एकर जिम्मा स्वयं लैत अन्तिम तीर छोड़लनि- 'देखऽ जँ तोँ सभ ठीके जनहित चाहैत छह तँ अवसरकेँ चूकह नहि। संतोषक नागरिक अभिनन्दनक जोगारमे लागि जाह। जँ कोर्टमे जयबह तँ तोंहू सभ कोर्टमे दौड़-बरहा करैत टाका बुकबह आ ओहो हमरा-तोरा लेल कमायल टाका कोर्ट कचहरीमे झोंकैत रहतह। फल किछु नहि भेटतह आ दुनू भुस्सा थरि बैसि जयबह जेना आर्यावर्त आ डाक्टर साहेब बैसि गेलाह। तेँ ई जनहित याचिकाक नेयार छोड़ि जनहितक कल्याण लेल ओकर अभिनन्दनक तैयारीमे लागि जाह। एहीमे तोरो सभक कल्याण हेतह आ ओकरो हेतैक। घर आयल धनकेँ कोर्ट-कचहरीमे बुकब हमरा जनैत उचित नहि होयतह।'

करिया कक्काक सलाह युवकलोकनिकेँ जँचि गेलनि। आखिर किएक ने जँचितनि-संतोषे टा एकटा एहन मर्द भेल जे बाढ़ि सहायता लेल आयल करोड़ो टाका हथिया लखनौर, सांगी, कैथिनियां, मधेपुरासँ लऽ कऽ खगड़िया धरि मिथिलाक नाम रौशन कयने छल। युवक सभ करिया कक्काक सलाह आ संतोषक कीर्तिमानक जयघोष करैत हुनक दलानपर संतोष झाक अभिनन्दन करबाक निर्णय लऽ तैयारी करबा लेल शनैः शनैः अपना-अपना गाम दिस विदा भऽ गेल।

(जून - 2005, समय-साल)

धन्यवाद ज्ञापन

''की रौ महेशबा, एहू बेर सुन्ने चलि जयतै दुर्गापूजा। ने गीत, ने संगीत; ने नाटक आ ने नौटंकी। रे, एहि बेर किछु कर जे गामक लोक एकठाम जुटय''- परमेशर महेशक पीठपर धौल जमबैत बाजल।

'से किए रौ, की नेताजीक बैसारीसँ तोरो बैसारी भऽ गेल छौ जे गामक चिन्ता धऽ लेलकौए ? एहि बेरूक बाढ़िमे नेताजीक हाथ किछु नहि लगलनि तँ तों लोककेँ जुटा कऽ मोन जुड़बऽ चाहै छें।' महेश ओकर हाथ ठेलैत बाजल।

''से बात नइं छौ रौ! कैक टा गाममे देखै छिऐ जे दुर्गापूजामे खूब रमन-चमन होइ छै। दिनमे दुर्गा मैयाक पूजा-अराधना आ रातिमे गीत-नाद, नाटकक आयोजन कऽ गामक लोक एकठाम जुटैए आ आपसमे मीलि-जुलि सुख-दु:खक बात कऽ मोन हलकान करैए। बूझ जे गामकेँ एक बेर एहिसँ खुशहाली भेटि जाइ छै। देखही ने पिण्डारूछवला सभकेँ, कोना कऽ ओ अपन गामघरक संस्कृतिकेँ जिया कऽ रखने अछि। एकटा हम सभ छी जे लोटबे कि पेटबे मे सभ दिन लागल रहै छी।' परमेशर अपन मोनक बातकेँ खुलासा कयलक।

'बात तँ तों बेजाय नहि कहै छेँ रौ। मुदा तोरा ई कयनाइ की आसान बुझाइ छौ। एहि सभ तरहक आयोजन करबा लेल साधंश चाही, लूरि चाही आ चाही गामघरक युवाशक्तिक सहयोग।' कने रुकैत महेश फेर बाजल ''अच्छा छोड़ ई माथापच्ची, चल करिया कक्का ओतऽ। वैह एहिपर नीक राय देथुन।'

दुनू चलि पड़ल करिया कक्का ओहिठाम। दोसर दिस करिया भरि दिनुक खोराकी तमाकुल काटि कऽ चुना रहल छलाह आ सोचि रहल छलाह जे कोना किछु वर्ष पूर्व धरि गाममे सभा-सोसाइटीक बैसकी होइत छल, कोना दुर्गापूजामे युवा वर्गकेँ अपन संस्कृतिसँ जोड़ने रखबा लेल वाद-विवाद, गीत-संगीत आ नाटकक मंचन होइत छल आ गामक लोक अपन सभ किछु बिसरि एकाकार भऽ जाइत छल। मुदा जहियेसँ ई घोटालाक युग आयल पूराक पूरा परोपट्टाक युवावर्ग अपन सभ किछु बिसरि ओही व्यवसायमे लागि गेल आ जे बचि गेल से भागल दिल्ली, कलकत्ता आ बम्बइ अपन शिक्षा-दीक्षा आ रोजी-रोजगार लेल। मनमे अयलनि जे केहन दीव होइत जे अपना

गाममे फेरसँ ओहिना रमन-चमन होइत। ई सोचैत ओ जोरसँ तमाकूक चून उड़यबा लेल मूड़ी ऊपर कयलनि तँ दलान दिस महेश आ परमेशर केँ अबैत देखलनि।

'की हौ आइ दुनूकेँ संगे देखैत छियह। की बात छै जे पूब आ पच्छिम दुनू दिशाक हवा एक्के संग लागल अछि ?' करिया कक्का टिपलनि।

'कक्का कोनो खास बात नइं। आ बुझी तँ खासे खास।'-परमेशर बाजल।

'आब बजबो करबऽ की गोरने रहबऽ 'गूड़े' जकाँ।'– करिया कक्का अगुता उठलाह।

'बात ई छै जे हम सभ चाहैत छी जे एहि बेर गाममे दुर्गापूजामे पूजाक संग-संग गीत-संगीत, नाटकक आदिक आयोजन पहिने जकाँ होअय। अहाँक की विचार ?'– महेश करिया कक्का दिस प्रश्नवाचक दृष्टिये तकलक।

'हौ, एकरा विचार नहि संकल्प कहक, संकल्प। जँ दुइयो गोटे ई नेयारि लेलह तँ बुझऽ जे भऽ गेलऽ बेरा पार। एकसँ एगारहक लोक कामना करैए, तों सभ दू टा छह, तेँ बाइस भऽ गेलह। एहि काजमे हमहू सोलहो आना संग रहबह, करैत जाह तैयारी।'

करिया कक्काक संग पाबि महेश-परमेशर चलि पड़ल तैयारी करबा लेल। सम्पूर्ण गाममे दुइये दिनमे खबरि भऽ गेल जे एहि बेर पूजाक संग-संग गीत-संगीतक कार्यक्रम सेहो होयत। फेर एकटा बैसार करिया कक्कांक नेतृत्वमे भेल जाहिमे ई निर्णय लेल गेल जे एहि आयोजनमे बेसीसँ बेसी नेना भुटकाकेँ शामिल कयल जायत जे अपन प्रतिभासँ गामकेँ आलोड़ित करता। ई खबरि शहरमे रहनिहार ग्रामीणकेँ सेहो देल गेलनि। एकटा निर्णय ईहो भेल जे एहि बेरूक कार्यक्रमक उद्घाटन लेल कोनो राजनीतिज्ञकेँ नहि बजा अपने परोपट्टाक कोनो विद्वानकेँ मंचपर बजाओल जायत जाहिसँ कि युवावर्गकेँ हुनकासँ प्रेरणा भेटनि।

आखिर ओहो दिन आबि गेल। नवमीक रातिमे पूरा गामक लोक कार्यक्रम स्थलपर उमरि आयल। गामक कलाकारक अतिरिक्त शहरमे रहनिहार ग्रामीणक धीयापूता तँ बेस जुमि गेल अपन-अपन प्रतिभा देखयबाक लेल। कार्यक्रमक उद्घाटन करैत देशक प्रख्यात साहित्यकार फणि बाबू नेना भुटकामे जोश भरैत कहलनि जे हमर गाममे एतेक बाल-कलाकार होयत तकर अनुमानो नहि छल। हम उमेद करैत छी जे एहिना हमर परोपट्टाक प्रतिभा सभतरि अपन एकबाल कायम करता।

हुनकर भाषणक बाद शुरू भेल बाल-कलाकार सभ द्वारा गीत-संगीत एवं नृत्यक कार्यक्रम।

पूरे तीन घंटाक कार्यक्रममे भांगड़ा भेल, डांडिया भेल, गरबा भेल, बिहू आ पहाड़ी नृत्य भेल। पॉप संगीतक संग रॉक एण्ड रोलसँ लऽ कऽ एक सँ गीतक गौलक बच्चा सभ। देखबामे दाइ-माइ सभकेँ ई आयोजन बड़ नीक लगलनि मुदा ओकर सभक बोली आ भास नहि बुझि सकलथिन। नचैत नेना जे गीत गबैक तँ ओ ओहिमे अपन भास आ गीतकेँ ताकथि मुदा किनको किछु नहि भेटलनि।

करिया कक्काकेँ सेहो चकविदोर लागल छलनि जे एते नान्हि-नान्हिटा धीया-पूता कोना देश-विदेशक गीत-संगीतकेँ संयोगि कऽ अपना गाममे लऽ अनलक अछि मुदा लगले एक बातक अफसोच होबऽ लगलनि। तावतेमे कार्यक्रमक समाप्तिसँ पूर्व हुनकासँ धन्यवाद ज्ञापन करबा लेल हुनक नामक घोषणा महेश मंचसँ कयलक। पहिने तँ ओ अकचकयलाह मुदा फेर नहुये-नहुये मंचपर पहुँचलाह आ बाजय लगलाह– भाइ, बहिन एवं धीयापूतालोकनि, हम आइ अपना गाममे एहि तरहक आयोजन देखि गदगद छी तेँ सभसँ पहिने महेश आ परमेशरकेँ धन्यवाद दैत छियनि जे एहि तरहक आयोजन करबाक बीड़ा उठौलनि। हम धन्यवाद दैत छियनि अन्य आयोजक लोकनिकेँ जे एकरा सफल बनयबा लेल जी तोड़ मेहनत कयलनि आ व्यवस्था बात कयलनि। हम धन्यवाद दैत छियनि प्रत्येक बालकलाकारक अभिभावककेँ जे अपना-अपना बच्चाकेँ देश-विदेशक विविध संस्कृतिसँ परिचित करा ओकरामे अजस्र प्रतिभा भरबाक प्रयासमे लागल छथि। हम धन्यवाद दैत छियनि प्रत्येक कलाकारकेँ जे बहुत कमे वयसमे आन-आन भूमिक संस्कृतिकेँ अपनामे आत्मसात करबाक प्रयासमे लागल अछि। हम धन्यवाद दैत छियनि प्रत्येक ग्रामीणकेँ जे एहि आयोजनमे शामिल भऽ फेर एक बेर गामक एकताकेँ जगजियार कयलनि।

करिया कक्का कनेक रुकलाह। चारू भर शान्ति व्याप्त छल करिया कक्का सन ग्रामीणक मुंहसँ धन्यवाद ज्ञापनक एतेक समधानल शब्द सभ सुनि कऽ।

करिया कक्का पुनः बाझल कंठसँ खकसैत-खकसैत बाजि उठलाह– मुदा एहि अवसर पर हम अपन धरती माता मिथिलाकेँ धन्यवाद नहि दऽ सकबनि जे अपन कोखिसँ आब अपन गीत-संगीत आ कलाकेँ अक्षुण्ण रखनाहर सन्तानकेँ जन्म देबामे अक्षम भऽ गेलीह अछि। मिथिलामे मिथिलाकेँ बसयबामे अक्षम भऽ गेलीह अछि।' एतबा कहैत-कहैत हुनकर गला अवरूद्ध भऽ गेलनि आ ओ हाथ जोडि मंचसँ उतरि गेलाह।

□

मोआबजाक खोजमे

करिया कक्का दलानपर गुम-सुम बैसल छलाह। वर्षाक बुन्द झहरि रहल छल। ओलतीमे खसैत पानि अपन निरंतरताक स्वर प्रदान कऽ रहल छल। कक्का सोचि रहल छलाह जे की बात छै जे आइ क्यो नहि टघरल अछि। आन दिन कतबो बिहारि-पानि बरिसैत छल तैयो चौपाड़िक गपक्कर जुमिये जाइत छल। सोचय लगलाह ओ जे गामपर कोनो आन चौपाड़ि ने तँ मुड़ी उठा रहल अछि? की तावतेमे देखैत छथि जे सात-आठ गोटे उपरौंझ करैत हुनके दलान दिस टघरल आबि रहल छनि। क्यो माथपर गमछा धयने तँ क्यो छत्ता लगौने। बरखा भऽ रहल छै तकर परवाहि कयने बिना तीन चारि गोटे हाथ चमकबैत, अनकर बात कटैत, तीतैत-भिजैत अप्पन बातकेँ ऊपर उठौने अछि।

करिया कक्का बुझि गेलाह जे कोनो बातपर बेस रगड़ा भऽ रहल छै आ जेँ आपसमे कोनो फैसला नहि भऽ रहल छै तेँ ओ सभ एहिठाम आबि रहल अछि। करिया कक्काक मोंछ फरकऽ लगलनि, ठोर ऊपर नीचां होमऽ लगलनि आ अपना बुद्धि-कौशलपर गुमान होअऽ लगलनि। जहाँ ओ सभ सड़कसँ उतरि दलान दिस बढ़ल कि ओ हाक लगौलनि-'हे पानिसँ कनेक बचैत आबह। माथपर धोती धऽ लइतह तँ की भऽ जइतह। गप्पक धूनमे सोह नहि जे लाखोक ई कायापर निरर्थक पानि पड़ि रहल छह।'

लग अबैत आ माथपरक पानिकेँ हाथसँ गारैत तुनकैत हरिया बाजि उठल-'अहूँ कक्का हद्दे करैत छी। एहि अमोल शरीरक दाम अहूँ लाखे टका अकैत छी?'

'हौ, हम की अपना मोने दाम लगौलियह अछि। आब तँ सरकारक घरेमे मनुक्खक दाम तय होइत छैक। हवाइ जहाजमे मरल तँ दू लाख, ट्रेनमे मरल तँ एक लाख, नरसंहारमे मरल तँ दू लाख आ मानि लैह जे शरीरमे कोनो टूट-फूट भेलैक तऽ पाँच-दस हजार सैह ने। आ सेहो भेटि जाइक तँ परिवार गंगा नहौलक। आब अपना मोने तों अपन कायाक दाम करोड़क करोड़ लगाबह तँ तोहर इच्छा। सरकारक घरमे तँ ओतबे छैक आ सेहो जीबैत शरीरक नहि, मृत शरीरक।'- करिया कक्का चौकी झारैत बजलाह।

'अहाँ कोना बुझि गेलिऐ कक्का जे हम सभ मोआबजेपर बहस कऽ रहल

छी।'- रमेसरा कक्कासँ पूछि बैसल।

'हौ रमेसर, एहि बरखामे तोँ सभ बिनु देह-दशाक परवाहि कयने, भिजैत-तितैत, बहस करैत आबि रहल छह से देखि हम एतबो अनुमान नहि लगा सकैत छी जे बहसक विषय की होयतैक आ ताहूमे साल दर साल बाढ़िक कीर्तिमान बनबयवला एहि नगरीमे। बेरेपर ने बहस होयबाक चाही, हल्ला-गुल्ला होयबाक चाही तखन ने मोआबजा देबा लेल सरकारक अमला सभ अँगैठीमोड़ लैत एमहर दिस ताकत।'- करियाकक्का सभकेँ ताव दैत आगांक बात बुझबा लेल बोलारा देलनि।

'हँ यौ कक्का, अहाँ किएक ने बुझबै। अहीं तँ एहि गाममे छी जे सभक तऽरी-घट्टी बुझै छिऐ आ बेरपर लोककेँ सचेत करै छिऐ। आब अहीं कहू जे पानि आ बालुवला एहि क्षेत्रमे माओवादी उत्पाती सभकेँ की भेटलैक अछि जे पानि-बुन्नीक समयमे एहि इलाकामे आबि कऽ उत्पात मचा रहल अछि आ लोकक निन्न नाहक उड़ौने अछि?''-जोगी पुछलक।

'ओ आब बुझलियह, तों सभ माओवादी उत्पातीक दंशसँ मारल गेल लोकक परिजनकेँ भेटयवला मोआबजा कोना भेटय, कतेक भेटय, ककरा भेटय ताहिपर बहस कऽ रहल छलह अपनामे, सैह ने।'- करिया कक्का प्रश्नक उत्तरमे प्रश्ने दगैत पुनः सभ दिस तकलनि।

'अहाँ ठीके बुझलिऐ कक्का'- सुदना सुस्तेसँ बाजल।

'हँ बात तँ बड़ गंभीर छह मुदा एकर उत्तर अति सरल छह। हमरा ई बुझैमे नइं अबैत अछि जे आखिर कहिया तों सभ बुद्धिसँ चेतन होयबह। चेतने समिति जकाँ अचेतन होइत बाप-पुरखाक छानल डीह-डाबरसँ बेघर होइत रहबह, मुदा लोक-समूहक इच्छा-आकांक्षाकेँ कहियो नहि चिन्हि सकबह। तोंही सभ बताबह जे जखन नेपालसँ आयल पानिसँ पूरा परोपट्टा उपला जाइत छह, सैकड़ों-हजारो मनुक्ख, पशुधन उबडूब करैत जलसमाधि लऽ लैत छह तखन तँ सरकार तोरा सभकेँ आध मन गहूम की 10 सेर चाउर खोराकी आ दू-चारि सय टाका मोआबजा दऽ कऽ करोड़क करोड़ टाका अपन अमला आ नेता सभकेँ हजम करबा लेल छोड़ि दैत छैक। तखन तँ तों सभ मुंहो नहि खोलैत छह आ एहि माओवादीक हमलामे छिटपुट रूपें मारल गेल लोक लेल ओ अपन बखारी की खजानाक मुंह मोआबजा लेल किए उदार भऽ कऽ खोलत? बुझह जैह दऽ दैत छह सैह लाभ।'' कक्का सभकेँ एकटा नमहर भाषण पियौलनि।

''से किएक कका? की हम सभ भट्टा-मूर छी जे नेपालक माओवादी ओतऽसँ ससरि कऽ एतऽ आबि जायत आ हमरा सभकेँ लूटपाट करैत भुजि-भाजि कऽ चल जायत आ तकरा एवजमे सरकारो किछु मोआबजा नहि देत, ने नोकरी-चाकरी आ ने, मोट टके पैसा?'' बिसुनमा विफरल।

'हौ, तोहर सरकार आ कि नेता सभ बुझि गेल छह जे सालमे एक बेर एकरा सभकेँ मोआबजा देबहि पड़ैत अछि तँ दोसर मोआबजा किएक दी। तँ ओ निश्चिन्त छह आ जहाँ धरि नेपालसँ आयल माओवादी उत्पादीक प्रश्न छह तँ नेपालो सरकार ई बुझि गेल छह जे जखन मिथिलावासी नेपालक पानिसँ सामूहिक जलसमाधि लेलाक बादो 'चूं-चापर' नहि करैत अछि तँ थोड़ेक माओवादीकेँ खेहाड़ि कऽ उत्पात मचयबा लेल मिथिलामे पठा देबैक तँ ओ सभ थोड़बे बाजत? आ एहि उत्पातक बाद मोआबजा देबाक बात जहाँ धरि छैक तँ बिहार सरकारक मोआबजा नीतिक आ मिथिलावासी कहियो किछु बाजल अछि जे आब बाजत।'

करिया कक्का नमहर भाषणकेँ विराम देबाक लक्ष्यसँ बजलाह— हौ, मोआबजे पर जीबाक जँ तों सभ नेयार कऽ लेने छह तँ किछु गोटे देखि आबह उड़ीसामे बाँटल गेल मोआबजाक वस्तुजात, देखि आबह आन्ध्रक तूफानमे देल गेल मोआबजाक लिस्ट, देखि आबह बड़ौदामे बाँटल जा रहल मोआबजा। जँ ई सभ देखि अयबह आ अपन इलाकामे एना लोककेँ मोआबजा दिआ सकबह तँ नोकरी-चाकरीक के पूछय, खेती-बाड़ीमे लार-चार करबासँ सेहो निश्चिन्त भऽ जयबह।''

करिया कक्काक मोआबजापर देल गेल भाषणसँ मोटामोटी सभक आँखि खुजि गेल छल। सभ अपना-अपनी निर्णय लेलक जे ठीके आन प्रदेशमे कोना मोआबजा देल जाइत छैक, कतेक देल जाइत छैक आ ककरा देल जाइत छैक, से पहिने पता कऽ लेल जाय तकरा बादे माओवादी उत्पातसँ भेल कोनो प्रकारक हानिपर विचार कयल जायत तँ ठीक होयत। एना धमर्थन कयने कोनो फलाफल नहि होयत। ई विचार अबितहि धीरे-धीरे पानिमे भिजैत-तितैत सभ अपना-अपना गामपर विदा होयबा लेल ठाढ़ होअऽ लागल। ककरो ई सोह नहि रहलैक जे प्रकृति प्रदत्त ई अनमोल काया पानि पड़लासँ मौला सकैत छैक, गलि सकैत छैक, सड़ि सकैत छैक। मोआबजा लेल बनल मिथिलाक शरीर वाजिब मोआबजाक खोजमे निमग्न भऽ वर्षामे चलि पड़ल।

—जून, 2005-समय-साल

की मथै छी?

'की मथै छी?'

'मिथिला!'

'की तकै छी?'

'मैथिली।'

'भेटल?'

'नइं।'

वर्षमे एकबेर अनंत पूजामे प्रायः एहिना दुग्ध इत्यादिकेँ क्षीरसमुद्र मानि ओहिमे अनंतक तागकेँ धऽ कऽ एकटा पुरहितक संग उपर्युक्त वाक्यांश बजैत, क्षीर समुद्रकेँ मथैत अनन्त भगवानकेँ ताकल जाइत अछि। प्रायः एहिना हमहूँ लोकनि प्रत्येक वर्ष विद्यापति पर्वमे मिथिलाक विकासक निमित्त ओकर विभिन्न पक्षकेँ मथैत-मथैत अन्ततः माछी जकाँ भिनभिनाइत मैथिलीकेँ ताकि लैत छी आ ओकरा संविधानक आठम अनुसूचीमे शामिल करयबाक निमित्त आन्दोलन करबा संबंधी ओकर प्रस्तावकेँ अनन्त जकाँ हाथमे बान्हि बाँहि मजगूत करैत वर्ष भरि निचैन भऽ जाइत छी।

एमहर नेतालोकनिकेँ कोनो नव मुद्दा नहि भेटि रहल छनि तँ ओहो मिथिलाकेँ मथैत-मथैत मैथिलीपर आबि कऽ बैसि जाइत छथि। मुदा कोनो पाटीक नेतामे भ्रष्टाचारक कारणे जँ कि पुरुषत्व नहि बांचल छनि तँ मैथिलीक विकास निमित्त नेतृत्व करबाक साहस नहि होइत छनि। प्रत्येक मैथिल नेता सभ सभा-गोष्ठीमे औताह अवश्य मुदा जेना गीतगाइन सभ शुभ अवसर पर कोनो आंगनमे जाकऽ 'चलू-चलू बहिना हकार पुरइल, टुन्नी दाइक वर अयलथिन टेमी दगइले' गीत गाबि दैत छथिन, तहिना ईहो लोकनि आबि टेमी बारि मैथिलीक गीत गाबि दैत छथि आ पुनः अन्तःपुरक हेतु प्रस्थान कऽ जाइत छथि।

मैथिली भाषीक दुर्भाग्य ईहो छैक जे ओ मथबेमे बेसी विश्वास करैत अछि खाहे भाषाक समस्या होइक वा सम्पतिक। कोनो समस्याकेँ मथैत-मथैत अपने ओकरा

जेना विकराल बना दैत अछि तहिना अपन सम्पत्तियोकेँ मथैत मथैत मिथिलाक भगिनमान आ पंजाब-हरियाणाक डीही बनबा लेल अस्पयांत रहैत अछि। ओना ई बात निर्विवादित अछि जे प्राचीन कालक मिथिलावासी मक्खन महि कऽ घी निकालैत छलाह, शास्त्र पुराण मथि कऽ नव-नव दर्शन उपस्थापित करैत छलाह, अपना धीयापुताक संग-संग देश-देशान्तरक लोककेँ शिक्षा दऽ मनुक्ख बनबैत छलाह मुदा आब तँ नित नव-नव गप्प मथैत छथि, अपन घर भरैत छथि, पड़ोसियाक कोना उकन्न न होअय तकर व्योंत धरबैत छथि। खेती-पथारी विलहि गेल; उद्योग-धंधा अलोपित भऽ गेल, मिथिलो सन सदाचारी क्षेत्रमे एड्स पैसि गेल, कालाजार बसि गेल; रस्ता-पेड़ाकेँ कोशी-कमला-बागमती गीडि गेल मुदा मिथिलावासी बुद्धिजीवी, अभियंता, प्रशासक, चिकित्सक मिथिलाकेँ एखन धरि मथिये रहल छथि।

संयोग अछि जे अनन्त भगवान अपना पाछाँ विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन करैत छथि आ हमरा लोकनि मिथिलाक महान एहि व्यक्तित्वकेँ मथबा लेल यत्र-तत्र-सर्वत्र जुटैत छी। एहू बेर आशा अछि जे मिथिलाकेँ मथैत-मथैत हमरा लोकनि मैथिलीकेँ ताकिये लेब। किएक तँ हमर मैथिली विद्यालय-महाविद्यालयसँ अलोपित भऽ गेल अछि, चीर-हरण होयबाक कारणे न्यायालयमे न्यायक भीख मांगि रहल अछि, जमाय-ससुरक बहिकिरनी बनबा लेल विवश अछि, वितंडी साहित्यकार सभक चमरछोंछक कारणे कुरूप भऽ गेल अछि, मैथिलीक पाइ खयनिहार अध्यापक-प्राध्यापकक रखैल बनलि अछि, किछु सामाजिक कार्यकर्ताक आमदनीक साधन बनल अछि। नेता-अभिनेताक षड्यंत्रक अस्त्र बनलि अछि तँ एहू बेर सम्पूर्ण मिथिलाक समस्याक रूपमे मन्थन क्रियाक बाद यैह टा भेटत आ ओकरा त्राण दिअयबा लेल हमरा लोकनि प्रस्ताव पास करबे करब।

मन्थन क्रियाक तैयारी चलि रहल अछि। कतहु भाषणक तैयारी अछि कतहु नाटक-तमाशाक। कतहु नव-नव पोथी-पतरा देखा कऽ साहित्य अकादमी पुरस्कार पयबा लेल नव-नव पैंतरा देल जायत तँ कतहु आनन्द मेलामे जीहक बदला आँखि सेदल जायत।

मैथिली भाषीकेँ चाहियनि जे नहिं मिथिला लेल तँ मैथिलीये लेल सही एहि मन्थन-पर्वमे अवश्य शामिल होथि आ हमरा लोकनि चारि करोड़क संख्यामे छी तकरा प्रमाणित करबा लेल एक लाखक हस्ताक्षर अभियान चलाबी तथा एहि वर्षसँ चारि डेग पाछां हटि अगिला वर्ष फेर एहि मन्थन पर्वमे अवश्य भाग ली, से प्रतिज्ञा करी।

(17 नवम्बर, 2002, समय-साल विशेष बुलेटिन)

दिव्य ज्ञानक प्राप्ति

बेलीरोड, पटनाक सड़क पर बड़का-बड़का टा कैकटा तोरण द्वार बनल छल जाहिपर दूरेसँ पढ़बामे दृष्टिगोचर भेल- 'स्तनपान सप्ताह'। सहसा स्मरण भऽ आयल अखबारमे छपल एहने सन एकटा विज्ञापन। विज्ञापन पूरा-पूरी नहि पढ़ि पौने रही मुदा तोरण द्वार देखिते किछु-किछु आभास होमऽ लागल जे राष्ट्रभाषा हिन्दीक रक्षार्थ जे पखवाड़ा, सप्ताह मनाओल जाइछ तहिना स्तनक रक्षा सन जरूर कोनो गंभीर मामिला छैक। प्रायः तँ ई आयोजन।

सोचल, हिन्दीयो तँ कोनो दिवंगत नेता जकाँ एकटा राष्ट्रक धरोहरि छैक तँ ओकरा स्मरण करबा लेल हिन्दी-दिवस, हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवारा आदि आयोजनक मामिला बनैत छैक मुदा ई की छैक स्तनपान सप्ताह। फेर भेल, हिन्दीक महत्ता एखनो छैक से देखयबा लेल जेना सरकारी कार्यालय सभमे वाद-विवाद, कवि-सम्मेलन, भाषण प्रतियोगिता होइत छैक तहिना कोनो आयोजन होयतैक जाहिमे महिलालोकनि भिन्न भिन्न तरहें स्तनपान करयबाक तकनीकक प्रदर्शन करतीह जाहिसँ सभ वयक लोक लाभान्वित होयत। मुदा एहि सभ बातक जानकारी ओहि तोरण-द्वार पर नहि लिखल छलैक तँ एहि मादे आर उत्सुकता बढ़ले गेल।

ओतऽसँ आगाँ बढ़ि तँ गेलहुँ मुदा मोन ओहि तोरण-द्वार पर लिखल पांतियेपर टांगल रहल। आखिर की कारण छैक जे स्तनपान सप्ताह मनाओल जा रहल छैक? फेर लगले ओही सड़क पर टांगल एकटा सिकरेटक विज्ञापन पर नजरि गेल। सिकरेट धुकैत एकटा युवक, सोझांमे ठाढ़ि एकटा युवती, जे आधा वक्ष उघारने आधा झंपने मुस्किया रहल छलि, कँ कहि रहल छलैक- 'फिंर हो जाये एक बार।' ओहि पूरा विज्ञापनमे जाहि वस्तुकेँ वस्तुक रूपमे आकर्षक रूपसँ दर्शाओल गेल छलैक से ओहि युवतीक वक्षस्थले छलैक। तत्काल किछु अर्थ तँ ओकर लागल मुदा पूरा-पूरी नहि।

ई सब सोचैत रहलहुँ आ आगां बढ़ैत रहलहुँ। रस्तामे एहन अनेक 'होर्डिंग' टांगल भेटल जाहिमे विभिन्न प्रकारक वस्तुक नाम लिखल रहैक मुदा सभमे जे एकटा चित्र जगजियार रहै से कोनो ने एकटा युवतियेक छलैक जे ओहि वस्तुसँ बेसी अपन वस्तुक ओहिना प्रचार कऽ रहलि छलि जेना नवका बिस्कुट 'फिफ्टी-फिफ्टी' करैत

अछि। अर्थात् आधा मीठ, आधा नोनगर! आधा झांपल आधा उघार। हमरा भेल जे ई स्तनपान समारोह सेहो एहिना 'फिफ्टी-फिफ्टी'क तर्जपर अवश्ये होयतैक किएक तँ जहियासँ आधुनिकालोकनि साड़ी तजि सलवार-सूटमे आधा आबादीक स्वतंत्रताक नारा लगबय लगलीह अछि तहियेसँ ओढ़नी सेहो 'फिफ्टीये' पर रखैत छथि आ 'फिफ्टी' ओहिना लोकक अवलोकनार्थ कूदफान करैत रहैत छनि।

ओना भरि दिन किछु-किछु करैत रहलहुँ मुदा ध्यान ओहि स्तनपानेवला बात पर लागल रहय। डेरा आपस आबि रातिमे मोनकँ बहटारबाक प्रयास करैत टी. वी. खोलि एकटा सीरियल देखय लगलहुँ। मुदा आहि रे बा! ओहूमे कोनो ने कोनो बहाने स्तनेक दर्शन। विज्ञापन ब्लेडक हो वा दारूक-सभक उपयोगिता बढ़यबामे ओकरे योगदान सर्वोपरि। फेर दिमागमे मंथन शुरू भेल-सिनेमा आ सीरियलमे मानल जे प्रेम-प्रसंग, बलात्कार, नहयबाक की कपड़ाक बदलबाक सीन आवश्यक रहैत छैक जाहिमे ओकर दर्शन नितांत आवश्यक छैक मुदा आनठाम जे ओकर दर्शन कराओल जाइत छैक तकर की अर्थ? अपना पर ग्लानि सेहो होअय जे दावी अछि बड़का बुद्धिजीवी होयबाक मुदा एतनी टा चिज कतेक तेजीसँ एमहरसँ ओमहर डोला रहल अछि। हठात् एकटा बात मोन पड़ल-नवका फैशनमे जेना आब सभटा पहिरना फ्री साइजक होइत छैक तहिना तँ बीस वर्षसँ सभ महिलाक ब्लाउज 70 सेन्टीमीटर कपड़ासँ बनि रहल छैक चाहे ओकर वस्तुक साइज गेन नहि भऽ फुटबाल किएक नहि होइक! सार्वजनिक दर्शनक किछु अर्थ एहूठाम लागल मुदा पूरा-पूरी तैयो नहि।

मोनकँ मानबाक बातो नहि रहैक। कारण जखन प्रदर्शन होइते छैक तँ 'फिफ्टी' किए, पूरा-पूरी किए नहि? फेर अपने बुद्धि पर तामस भेल जे हमरे किए ने पूराक पूरी बात सोचाइत अछि? तावत अपन नवजात शिशु पर ध्यान गेल जे एहि वयसमे स्तने पर निर्भर रहबा लेल अवतरित भेल छल। मुदा ओ हमरो गुरुघंटाल निकलल अछि से बुझले नहि छल। किछु दिनुका पूर्वक पत्नीक कहल बात स्मरण भऽ आयल- 'आबक चिल्हका पहिलुका जमानाक थोड़ छैक जे मायक स्तनपान कऽ दूधक दाम चुकयबा लेल मायक सेवा-बारी करबाक खतरा मोल लेत। आ ने ओतबे बुद्धू अछि जे जबरदस्ती घावक खैंठी सन मुंहठीकँ मुंहमे धऽ चुट-चुट करैत स्तनकँ दूहय लागत। आबक युगमे जखन कि मोलायम उज्जर धप-धप करैत 'पुपसी' नेपुलमे मनमाफिक दूध भेटिये जाइत छैक तँ किएक ओ इन्फेक्शनक खतराक संग-संग कर्जदार बनबा लेल करिक्का नेपुलक सेवन करत।'

ई बात मोन पड़िते बुझाय लागल जे हमरा सभसँ बेसी तँ ई जन्मौटीये सब दूरदर्शी अछि जे जन्मेकालसँ स्तनक सामाजिक उपयोगिता बुझय लागल अछि। परहितक कारणे स्वहितक त्यागमे ओकरा परमार्थ बुझाइत छैक। मैक्सी-सलवार सूटक

युगकँ देखैत ओ स्तनपानकँ अश्लील बुझय लागल अछि। नारी-मुक्तिक दौरमे शोषक नहि कहाबय ताहि लेल जन्मैते मायकँ मुक्त कऽ देखयबाक साहस कऽ रहल अछि।

टी० भीक सीन, नेनाक त्याग आ साहस पर आयल सोच फेर हमर दिमागी संतुलनकँ झकझोरय लागल छल। सीन पर सीन आबय आ हमरा रौंदैत चल जाय। मुदा स्तनपान सप्ताहक मुद्दा हमर दिमागकँ ओहिना हौंड़ैत रहल। सुतबासँ पूर्व किछु निर्णायक बात सोचैत-सोचैत तन्द्रवस्थामे आबि गेल छलहुँ की पत्नी लगमे सहटैत कहलनि-कैक दिनसँ कहि रहल छी जे दूटा भिरतका आँगी कीनि कऽ की आनि दियऽ तँ काने बात नहि दैत छी।'

हम कहलियनि-अहाँ कोना बुझलिऐ जे हम एही सभ दऽ सोचि रहल छी?'

छुटिते बजलीह- अहाँ मर्द सभक काजे की अछि, मौगीक देहे निघारब ने। तँ ने टी० भी० सँ लऽकऽ पत्र-पत्रिका सभमे मौगीक देहे देखा कऽ सभ कथुक प्रचार होमऽ लगलैए आब।' ओ कते काल धरि मर्दक छिच्छापर भाषण दैत रहलीह मुदा हमर ध्यान तँ स्तनपान वला बातपर टिकल छल, पुछलियनि- अहूँ 'स्तनपान' वला विज्ञापन देखलिऐक अछि?

कहलनि- हँ यौ। मुदा ओ की बच्चा लेल आ कि मौगीक स्वास्थ्य रक्षा लेल थोड़े छै? ओहो आयोजन अहीं सभ पुरुषक लेल छै।...'

ओ फेर बजैत रहलीह आ हम अपन विचारधारामे दहाइत रहलहुँ। पत्नीकँ नहि रहल गेलनि। देहमे दुलका मारैत कहलनि– नहि बुझलिऐक एहि सप्ताहक अर्थ?'

एकाएक दिव्य ज्ञानक प्राप्ति होयबाक प्रत्याशामे चौंकैत पुछलियनि- की?

'सरकार छेड़खानी-बलात्कार रोकबा लेल ई प्रचार कऽ रहल छैक?' पत्नी गंभीर मुद्रा बनबैत बजलीह।

'से कोना?' हम जिज्ञासु दृष्टिसँ तकैत पुछलियनि।

'जखने एहि सप्ताहक अन्तर्गत मौगी सभ चौक-चौराहा पर दिनादानिस देह उघारि कऽ चिल्हका सभकँ दूध पिअयबाक प्रदर्शन करतै पुरुषक ध्यान अनायासे घावक खैंठी सन मौगीक स्तनक नेपुल पर पड़तै। एहिसँ ओकरो सभक तरास ओहिना मिटा जयतै जेना आबक चिल्हका सभक स्तनपानक इच्छा नहि होइत छैक।'

हम अबोध नेना जकाँ हुनकर गप्प ध्यानसँ सुनैत रही आ ओ हमरा बुझौने चल जा रहल छलीह। आगां ओ अपन बात जारी रखैत कहलनि- 'फण्ड आबय दियौक, एहि अभियानक प्रदर्शन टी० भी०, सिनेमा सहित सभ चौक-चौराहा सभ पर तेना ने कयल जयतै जे 'पल्स पोलियो'क प्रचारक नामो-निशान मेटा जयतै।'

एतबा सुनैत-सुनैत हमरा दिव्य ज्ञान भऽ गेल छल। मोनक औनाहटि समाप्त भऽ चुकल छल। हमरा गौतम बुद्ध स्मरण भऽ अयलाह। अनायास मुँहसँ निकलि गेल-'बुद्धं शरणं गच्छामी।' आ हम अपन पत्नी, जे लगेमे पड़ल छलीह'क आंचरमे मुँह घुसा दिव्य ज्ञानक थाह लेबय लागल रही। मुदा हमर दिव्य ज्ञानक आभास बगलमे पड़ल हमर अबोध बालककेँ साठि खेलाइत-खेलाइत सेहो भऽ चुकल छलैक। ओ हमर परीक्षा लेबय लेल चिचिया उठल। मुदा स्तनपानक प्रबल समर्थक हमर पत्नी गओसँ ओकरा मुंहमे 'पुपसी' पकड़ाकऽ हमरा निचैन रहबा लेल आँखिसँ संकेत कऽ रहल छलीह।

(जून-2003, समय-साल)

दर्शन-सुदर्शन

"कीयौ, आबि गेलहुँ।। नहि रहल गेल। कैक वर्षसँ अहाँ हमर पछोड़ धयने छी जे विद्यापति पर्वक तैयारीक संग पर्वो समारोह देखब। चलू आबि गेलहुँ तँ ठीक अछि मुदा पहिने कहि दियऽ जे तैयारी आ पर्व-समारोह देखिये कऽ जायब। बीच्चेमे नहि भागब। सैह। कैक गोटे भागि गेलाह अछि एखन धरि-संस्थापक सँ लऽ कऽ कतेक साहित्यकार सभ, तँ गछाबऽ चाहैत छी। जँ एहि शर्तक संग तैयार छी तँ झुमि-झुमि कऽ गबैत हमरा संग चलू महाकवि विद्यापतिक चेतना समिति स्थित वासा पर, जतय हुनका स्मरण करबा लेल तीनदिना समारोहक आयोजनक तैयारी चलि रहल अछि।"

"देखू, यैह थिक अट्टालिकानुमा विद्यापतिक वासा- पटनाक विद्यापति मार्गमे। चिन्हलियनि हिनका की नहि? यैह थिकाह देवालसँ सटल, अपन मुख-मुद्रा बदलने, चहारदीवारीक अऽढमे नुकयबाक प्रयास करैत- 'देसिल बयना सभ जन मिट्ठा'-क उद्घोष कयनिहार विद्यापति, जे संस्थाक स्वर्ण जयन्तीवर्षमे घरवास लेलनि अछि। हमरा संग-संग अहूँ धन्यवाद दियनु विद्यापतिकेँ, किएक तँ एहि पीचपर ईहो ओहिना उतरलाह अछि जेना सचिन की द्रविड पीचपर उतरैत छथि।

नहि बुझलहुँ! दूर जो, अहूँ हद्दे लोक छी। एते टी०वी० पर मैच देखैत छी तैयो नहि। ठीकसँ देखियौ! जेना सचिन बाँहि-पीठ-छाती पर सहारा-विल्स आदि लिखबा कऽ उतरैत छथि तहिना ई अनाथ विद्यापति सेहो अपना सौंसे देह पर दाताक गोदना गोदवौने छथि। की करबै, एही कारणे मुंह छोट भऽ गेलनि- ओहिना जेना 'एक बित्ता का बित्तू मियां सवा हाथ का पूछ'क कहबी छैक।'

"आब छोड़ू हिनका। हिनकासँ की लेबाक अछि। ई तँ गांधी-जयप्रकाश जकाँ शपथ-संकल्प लेबऽ लल एतऽ घरवास लेलनि अछि, तँ बेसी लटारहममे नहि पड़ू। चलू आब भितरका दृश्य देखी।"

''वैह छै अध्यक्ष-सचिवक कार्यालय जाहिठामसँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक भाग जगंत छै। एखन धरि मिथिलाक जतेक काज भेलैक अछि से एंही कार्यालयक आदेशसँ, प्रस्तावसँ आ सहमतिसँ। नहि विश्वास होअय तँ जाकऽ देखियौ गऽ दक्षिणबरिया कार्यालयक कोठरीमे राखल दस्तावेज सभकँ।''

''अहाँकँ होइए जे हम फूसि कहैत छी। नइं यौ, हम फूसि किएक बाजब, आब सभटा इतिहास छपियो गेल छै। हे, खाली एक्के टा बात ध्यान राखब जे ककरो लिखलाहाकँ ककरोसँ मिलान नहि करबै। जँ मिलान करऽ लागब तँ ओहिना फँसि जायब जेना पछिला बेर मैथिलीक इतिहासक मंथनमे भेल रहय। ओना ई बात अहाँ जानि लिअऽ जे एखन धरि ई नहि फरिछा सकलैक अछि जे एकर संस्थापक के? मोटा-मोटी येह बुझि लियऽ जे जते पुरना बांचल सदस्य, ताहूमे जे जोरगर, एखन वैह छथि एकर नियंता। बुझलहुँ कि ने।''

''चलू एतऽसँ। क्यो देखि लेत तँ कहत जे घरपैठिया अछि आ रबाड़ि देत। आ जँ प्रसन्न भऽ जायत तँ परिचय-पात होइते चंदाक रशीद बढ़ा देत। आखिर किएक ने बढ़ाओत-विद्यापतिक नाम पर रडधुम्मस जे करबाक छैक। विद्यापतिक बर्खी जे छनि।''

''हे ई देखू, ई छैक पुस्तकालय। एहिमे दातालोकनि द्वारा देल गेल साहित्यकार लोकनिक चित्र टांगल छनि, दातालोकनि द्वारा देल गेल आलमीरामे दातेलोकनि द्वारा देल गेल अमूल्य पोथीयो सभ दर्शनार्थ राखल अछि। मुदा एहि पोथी-पत्रिकाक अभाग छैक जे ई लोककँ पढ़य लेल नहि भेटैत छैक। हँ, सांझूपहर एहिठाम आबयवलाक भाग्य नीक रहैत छैक जे एक कप चाह अवश्य भेटि जाइत छैक।

..की चाहक नाम सुनि अहूँक मोन चपचपा गेल। नइं मानबै, चाह पीबे करबै चेतना समितिक।

..छोड़ू चाहक झंझटि। एहि फेरमे पड़ब तँ आन दृश्य नहि देखि सकब। कारण एहि चौपाड़ि पर दूइये घंटाक खेल होइत छैक आ 22 घंटा चैनक बंसी बजैत छैक। अर्थात् जेना 2 घंटा 22 घंटाक बरोबरि होइत छैक तहिना दूइये पदाधिकारी एकरा टहलऽबै छै, चलबै छै आ दौड़बै छै। बाकी सभ गोटे ओहिना मुड़ी डोलबै छै जेना माटिक खेलौनाक बीचमे बुढ़बा मूड़ी डोलबै छै।''

विश्वास नइं ने भेल हमर बात पर तँ चलू देखबै छी स्टेज पर। देखियौ, ओतय पूरा कार्यकारिणी बैसल छैक। अपने आँखिये देखि लियऽ कोना निर्णय होइ छै एतय।

* * * *

''अयं यौ के छथि नेपालवला नाटककार?''

-''महेन्द्र मलंगिया दिया पूछै छी सर।''

-हँ, हँ, ठीके मोन पाडलहुँ। दऽ दियौ ओही नाटककारकँ एहि बेरूक चेतना पुरस्कार।'

-से तँ ठीक छै सर, मुदा हुनकासँ सीनियर.....।

छोड़, अहाँ की बूझबै। ककरो तँ देबै करबै, छोट होइ की पैघ। अरे, एहिसँ भारत-नेपाल दुनूमे चेतना समितिक ढ़ोल पिटा जयतै। की यौ, हम बेजाय कहै छी।'

-नइं सर, अहाँ तँ बड़ दूर तक सोचि लै छिऐ।''

-चलू ई झंझट खतम भेल। अहीमे अहाँ सभ माथापच्ची करैत रहितहुँ, हम फरिछा देलहुँ। आ सुनू एहि बेरुका कवि सम्मेलनमे ओहन लोककँ नहि बजायब जे बेसी मान-दान ताकय। ओना हमरा पूछी तँ कवि-सम्मेलने बन्न भऽ जयबाक चाही। लोक रहिते ने छैक ओहिकालमे। अनेरे पांच-दस हजार टाका खर्च भऽ जाइए।''

-से तँ सर ठीके कहै छिऐ, मुदा कवि सम्मेलन तँ होयबेक चाही।

-'होयबेक चाही। होयबाक चाही तँ टाका जुटबियौ ने। संस्थाकँ टाका चाही, टाका। खाली अहाँ सन कवि-साहित्यकारेक जुटान भऽ गेलासँ संस्था नहि चलै छै। टाका अनियौ, तमाशा देखू।'

-छोड़ू ने कविजी, सर जखन कहिये देलथिन तँ विचार करू ओहि पर। हँ, एकटा रस्ता निकालल जाय सर। एहि बेर, बहरबैया कविकँ नहि बजाओल जाय। टको कम लागत आ कवि-सम्मेलन करयबाक छुतको छूटि जायत।''

-हँ, सर हिनकर विचार उत्तम छनि। हमर एकटा परामर्श जे एहिबेर मैथिली अकादेमीकँ कवि-सम्मेलनक 'स्पाँसर' बनाओल जाय। पाइ ओ देत नाम हमरा सभक होयत।''

-'नहि यौ! मैथिली अकादमीकँ छोड़ू एहि बेर। ओकर पदाधिकारी बड़ पैघ घाघ अछि। देखलिऐ नहि पछिला बेर, कवि-सम्मेलनक नाम पर पांच हजार गछलक मुदा देलक दूइये हजार। बाँचत कतऽसँ डांड़ेसँ घाटा लागि गेल छल।'

-ठीक कहै छथि कैशियर साहेब। एहि बेर एहन व्यक्तिकँ संयोजक बनाउ

जे पाइयो आनय आ एहन कवि सभकें बजाउ जे कवि कम कविकाठी बेसी होअय। बुझलहुँ की नहि हमर इशारा?

– बुझि गेलहुँ सर। एहि लेल 'नऽव कविता'क विशेषज्ञकेँ भार देल जाय सर। हुनका किछुओ सलाह देबनि शिरोधार्य कऽ लेताह। मंचपरसँ धकिया कऽ कात कऽ देबनि परवाहि नहि करताह आ कखनो काल किछु कहियो देबनि तँ देह झारि लेताह सर।''

–ठीक छै। सुनू विचारगोष्ठीमे एहि बेर एहन विषय राखू जे सब अपने तनने रहय। जकरा जे फुराइ से बाजय। अराजकताक एहि समयमे जतेक विषय होअय से दऽ दियौ। विद्वान सभक एकमत कोनो विषय पर नहि रहलैक अछि, से ध्यानमे रखैत सभकेँ फराक-फराक विषय दऽ दियौ जाहिसँ श्रोता सेहो अकछा कऽ जल्दी चल जाय।'

–से किएक सर?

–दूर जी, अहूँ हद्द लोक छी। सभ बेर भोजनावकाशमे सय सौ उपर लोक भऽ जाइ छै से नहि देखै छिऐ। आखिर अपन बजटे देखिये ने विषय राखब। ने एकटा विषय रहतै आ ने सभक समर्थक जमल रहत। जकर-जकर भाषण भेल जयतै ओ समर्थक संग बहरायल जायत।''

–'सर अहाँक सोचक जबाब नहि अछि।'

– छोडू ई सभ लल्लो-चप्पो। आब आऊ सांस्कृतिक कार्यक्रम परा एना करू एहि बेर जे कहियो ने भेल होअय। यैह हमरा सभक कार्यक्रमक मुख्य अंश अछि। एकर भार तीन गोटेकेँ दऽ दियनु। ई लोकनि हमरासँ राय-विचार करैत सभटा सम्हारि लेताह। अहाँ सभ निश्चित रहू। आ हे, उद्घाटन सत्रक भार हमरा पर छोड़ि दियऽ। हम सभटा तय कऽ देब।''

★ ★ ★ ★

''किए भागल जाइ छी यौ साहित्यकार महोदय! एखन तँ मारते रास विषय बांचले अछि। समितिक कैकटा कोनामे घूमब बाकी अछि। छपलाहा किताब सभमे दीवार लागल जाइ छै से देखब बांकी अछि। चंदामे असूलल पैसाक जे बेरबादी होइ छै तकर हिसाब देखब बांकी अछि। मैथिलक एहि शीर्ष संस्थाक विशाल अट्टालिका कोना पाइ-कौड़ीक अछैत बरसातमे दहो-बहो नोरे कनैत अछि से देखब बांकी अछि।''

...नहि भागू यौ, यात्रीजी एकर स्थापना कऽ भागि गेलाह। आइ हुनकर फोटो टांगल छनि मुदा संस्थापकक दावेदार कैक गोटे भऽ गेलाह। अहूँ जँ भागि जायब तँ एहि मन्दिरक दर्शन के करत? मिथिला भवन जे सांस्कृतिक भवन नहि भऽ मायावी घर बनबाक तैयारीमे लागल अछि तकरा के देखतै?.. आयल रही आ कहने रही जे पर्वक तैयारी आ पर्वो देखब, मुदा अहाँ बीच्चेमे भागि रहल छी। एखन तैयारीक रिहर्सलो ने देखलहुँ आ पड़ायल जाइत छी।

जाइत छी तँ जाउ, मुदा ई जानि लिअऽ जे कतबो लिखब, कतबो पढ़ब, अहूँक वैह गति होयत जे विद्यपतिक भेलनिहे। अहूँ ओहिना कोनो कोनटामे मुँह नुकौने नुकायल रहब। नाम सभ अवश्य लेत, सप्पत भने अहींक खायत, संकल्पो अहींक नामपर लेत, मुदा करत वैह जे ओकरा मोन होयतैक। पड़ाइत रहब तँ एहिना पड़ाइते रहि जायब।

हे, हम रोकबो ने करब, बुझयबो ने करब आ ने अहाँ सम्मानित होइ ताहि लेल प्रयासे करब। ककरो बेगरता नई छैक तँ हमहीं किए उक्खड़िमे मुंह दी, पड़ौआ संग दऽ अपन धोती ढील करी। हम दर्शन करा देलहुँ अहाँ सुदर्शन नहि बनि सकलहुँ तँ हमर कोन कसूर?.....

(6 नवम्बर, 2003, समय-साल विशेष बुलेटिन)

हम मैथिल छी !

अखबारमे एकटा विज्ञापन आयल रहैक-'हर उम्र के उम्मीदवार मनपसंद नौकरी और मनचाहा वेतन के लिए सम्पर्क करें।' ओहि विज्ञापनमे रोजगारदाताक पताक संग-संग ईहो विश्वास दिआओल गेल रहैक– 'रोजगार देने की पूर्ण गारंटी। अवसर का लाभ उठायें, देश को खुशहाल बनायें।

ई विज्ञापन की निकलल गामघरमे शोर मचि गेल। जतऽ एकटा नोकरी लेल मारामारी होअय, ओहिठाम नोकरीक सबजना हकारसँ सभकेँ छगुन्ता लागल छलैक जे आखिर ई कोन व्यवस्था छैक जे एक्के बेरमे बेरोजगारक समुद्रकेँ पीबि जयबा लेल उगि आयल छैक। ककरो विश्वासे ने होइक जे ई विज्ञापन सत्य छैक। विश्वासो कोना होउक। बिहार सन प्रदेशमे जे नोकरी होइत छैक से बिनु (काटर) दहेज लेने नहि। जेहन नोकरी तेहन काटर। चाहे ओ सरकारी होअय वा प्राइवेट। सरकारीमे 'रेट' रहै छैक गैर सरकारीमे 'फेट'। जकर जतऽ लहि जाय। योग्यताक कोनो प्रश्ने नहि, ओहिना जेना वरागत लेल बेटीक सुन्दरता, योग्यता आ कुल-शीलक कोनो प्रश्ने नहि रहि गेल छैक।

एहन स्थितिमे मनमाफिक नोकरी आ दरमाहाक ई सबजना हकार-बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक जोगार कोना संभव छै, से ककरो बुझबामे नहि आबि रहल छलै। मुदा एहि विज्ञापन दिससँ मुंह मोड़ि लेल जाय सेहो संभव नहि छलै। कारण, नोकरी आ दरमाहे तकक प्रश्न रहितैक तँ एकटा बात छलै, देशकेँ खुशहाल बनयबाक बात सेहो रहैक। संग-संग अवसरक लाभ उठयबाक बात सेहो कहल गेल रहैक।

मिथिलाक लोक एहि दुनू बातपर बड़ सतर्क रहैत अछि। अवसरक लाभ कोना लेल जाय से ओ नीक जकाँ जनैत अछि। बेटीक विवाहक बात होअय वा श्राद्धकर्मक। अड़ोसी-पड़ोसी, सर-कुटुम्बक खेत-खढ़िआन भरना लेबऽ मे एहिठामक लोक एकोरत्ती नहि हिनछिनाइत अछि। बर-बीमारी आ लाचारीमे तँ अगते सूदि लऽ कर्ज देबऽमे नहि चुकैत अछि। रहल बात आपसी प्रेमभाव आ सौहार्द बढ़यबाक बात तँ एहिठामक लोक बापसँ बेटाकेँ मोड़ि कऽ, भाइसँ भाइकेँ तोड़ि कऽ कखनो प्रेमभाव बनयबा लेल आतुर रहैत अछि।

आ जहाँ धरि देशकेँ खुशहाल बनयबाक बात छैक तँ ओ देशमे सभ दिनसँ एक नम्बरपर अछि। सवा कट्ठाक डीह अछि तँ ओहीसँ तृप्त। 'न माधो से लेना, न उधो के देना।' खुशहाली अनबाक भार ओ कहियो ने लेलक। जानथि बाबा बैद्यनाथ आ कि जानय सरकार। ने हरहर, ने खटखट। जालमे फंसि गेल तँ रहूक मूड़ा, बाढ़िमे

दहा गेल तँ राहतवला अगबे अखड़ा चूड़ा। दुनू स्थितिमे महो-महो।

एहन मानसिकतामे घर बैसल ई नोकरी आ मनमाफिक दरमाहाक ई प्रस्ताव ठीके 'अनधन लक्ष्मी घर आउ' फकराकेँ सद्यः चरितार्थ करबा लेल सोझांमे उपस्थित छल। प्रश्न ई छल जे एहि विज्ञापनक सत्यताकेँ भजारबा लेल के सभसँ पहिने आगां आबय ? युवक सभ जखन माथा-पच्चीकऽ कऽ थाकि गेल तँ चलि पड़ल करिया कक्का ओतऽ।

करिया कक्का भिन्ने दलानपर बैसल अपन बीतलाहा जीवनक सिनेमा शून्यमे तकैत देखि रहल छलाह। कोना ओ अपन भाइ-भैयारीकेँ पढ़यबा लिखयबा लेल सभ सख-सेहन्ता बिसरि गेलाह। कोना ओ गाममे रहि गामक टंटा करैत रहलाह, कोना गामक अस्थिर चित्तकेँ शान्त करबा लेल अपन दलानकेँ चौपाल बना अपना हृदयकेँ चाक करैत रहलाह। जावत वयस रहनि तावत सभकेँ कयलनि। आ आबो सभ राय टा लेबऽ अबैत छनि मुदा ई क्यो नहि पुछैत छनि जे ओ कोना दिन खेपैत छथि।

एकाएक ओ शून्य दिस ताकब छोड़ि प्रफुल्ल भऽ उठलाह। हुनको मोन पड़ि अयलनि नोकरीक विज्ञापनवला बात। मोनमे अयलनि-किएक ने ओहो एक बेर अपन भाग्य अजमा लेथि। कहबीयो छैक-साठा तब पाठा'। आगां किछु आर सोचितथि कि सोझांमे चारि-पांच युवक आबि ठाढ़ भऽ गेलनि।

'आबह, आबह धीरू की बात ? केमहर अयलह अछि।' करिया कक्का आयल युवकमेसँ एकटाकेँ टोकलनि।

–की कक्का अहूँ ई सभ पूछि सभ बेर लज्जित कऽ दैत छी।- धीरू माथा नीचां कयने बाजल।

'हौ बात तँ कहह, भाभट ककरासँ ?' कक्का ठामहि दगलनि।

'बात ई छै कक्का जे ओ नोकरीवला विज्ञापन जे निकलल छै ताहिपर अहाँक राय चाही। की करी हम सभ से रास्ता देखाउ!- सुरेन्द्र आस्तेसँ बाजल।

'हाथ कंगन को आरसी का। अरे अवसर आयल छह। जाह आ भजारि लैह। जवानीमे ई डेग तँ स्वयं उठबऽ पड़तऽ।' -कक्का युवक सभकेँ ललकारलनि। मुदा ओहो सभ खेलायल छल। बाजि उठल रमेसरा-"बात ई नहि छै कक्का जे के जायत के नहि। बात ई छै जे ई विज्ञापनवाला ठीके नोकरी दै छै कि ठकै छै से भजारयवला कोनो ठेकनगर लोककेँ पहिने जयबाक चाही से हम सभ चाहैत छी।'

'अहाँसँ बेसी बोधगर कहाँ क्यो अछि जे ई भजारि सकत। तेँ सभ सँ पहिने अहीं जाइ से हमरा सभक आग्रह।' जावत करिया कक्का किछु कहथि तावत युवक दल दिससँ हरिया अपन फैसला सुना देलक आ हुनक मनाइयो लेलक जे सभसँ पहिने वैह जाथि ओतऽ। हुनका ईहो कहल गेलनि जे वयस, योग्यता कोनो बाधा नहि छैक तेँ ओ गामक खुशहाली आ अवसरक मांगकेँ देखैत इन्कार नहि करथि। नोकरीक पहिल लाभ वह लेथि। ई सभ कहि युवक दल चलि गेल।

करिया कक्काकेँ फेर एक बेर जोश भरि अयलनि। गामक चिन्ता, मिथिलाक चिन्ता घेरि लेलकनि। हुनका लागऽ लगलनि जे बिना हुनका नोकरी धयने मिथिलाक

कल्याण नहि भऽ सकतैक। से सोचि आनन फाननमे कुर्ता पहिरि कान्हपर गमछा धऽ विदा भऽ गेलाह।

विज्ञापित नोकरीवला स्थान पर पहुँचलाह तँ क्यो कतहु नहि। घोर आश्चर्य भेलनि जे एतेक रोजगार देबऽवला ओतय एक्को गोटे बाहरमे नहि अछि, जखनकि बेरोजगारक नियोजनालयमे कैकटा पतियानी हरदम लागल रहैए। फेर ओ कार्यालयमे झंकलनि तँ देखलनि जे एक गोटे कुर्सीपर बैसल ओंघा रहल अछि। ओ केबाड़ खटखटौलनि तँ ओ अनमन्स्क भावें बाजि उठल-'एखन धरि बेरोजगार लोक बाँचले अछि!'

कक्का भीतर गेलाह आ ओकरा नमस्कार कयलथिन। ओ आदरपूर्वक हुनका बैसौलकनि आ पुछलकनि- कहल जाओ अपनेकें केहन नोकरी चाही, कतेक दरमाहा चाही आ कतय नोकरी करय चाहब ?

करिया कक्काकें लगलनि जे फुसिये लोक नोकरीक नामपर कनैत अछि। मुदा जँ कि ओ एकटा बेरोजगारक रूपमे नोकरीक स्थिति भजारय आयल छलाह तें अपन शरीरकें तनैत बजलाह- हम मैथिल छी, तें हमरा जँ घरे लग नोकरी भेटि जाय तँ उत्तम आ जहाँ धरि दरमाहारक प्रश्न अछि तँ हमर वयस, हमर अनुभव आ हमर आवश्यकताकें देखैत दरमाहाक व्यवस्था कऽ देल जाय। ओ व्यक्ति मुस्कुरायल आ करिया कक्काक नजरि पर नजरि फेरैत बाजल- अहाँक नोकरी अहींक दरबज्जेपर हम दैत छी। अहाँक दरमहो हम अहींक मनमाफिक निश्चय कऽ दैत छी। खाली एकटा कष्ट देबऽ चाहैत छी।'

'से की ? कहल जाओ, धखयबाक कोनो बात नहि-' करिया कक्का घर आयल नोकरीकें हाथसँ नहि जाय देबाक लक्ष्यकें सन्धानैत बात आगां बढ़ौलनि।

'हमरा जनैत अहाँ ओतऽ बहुतो बेरोजगार युवक अबैत होयत आ राय मांगैत होयत।'-ओ व्यक्ति कहलक। हँ-हँ, पूरा परोपट्टाक युवक बिनु हमर रायक कोनो काज नहि करैत अछि- करिया कक्का हड़बड़ाइत बाजि उठलाह।

'तँ कमाउ ने भरि पोष। जाहि तरहक राय ओ मांगय ताहि तरहक एकटा फीस बान्हि दियौक। जँ दिनमे दसो टा सुतरि गेल तँ बुझू जे कन्तोरी भरबामे समय नहि लागत आ कैकटा नोकरीहाराकें अहाँ घरे बैसल-बैसल नोकरी देबऽ लगबनि।' ओ व्यक्ति कनेक बिलमल आ पुनः बाजि उठल-अहाँ मैथिल छी, गप्पक खेती आ गप्पक कमाइ दुनू घर बैसले कऽ सकैत छी। एहिमे ने पूंजी लागत आ ने मेहनति। हँ, तखन एकटा बात याद राखब जे एहि रोजगारसँ जे आमदनी होयत ओहिमे सँ 25 प्रतिशत इमानदारीसँ पठा देल करब तखन ने हम अपनो नोकरी कऽ सकब आ अनको मनपसिन्द नोकरी दऽ सकबैक।'

करिया कक्काकें नोकरी कोना भेटैत छैक से भांज लागि गेल रहनि। ओ ओतऽसँ गाम दिस विदा भऽ गेलाह। भरि रस्ता हुनका अफसोच होइत रहलनि जे मैथिल होइतो ओ एतेक वयस धरि किएक बेरोजगार बैसल रहि गेलाह ?

चुनावी तुक्का

जीवन रक्षाक बात पर

भारतक तटवर्ती इलाकमे सुनामी लहरि कि आयल मिथिलाक लोक पुन: सिहरि उठल आ ओकर आंखि डबडबा गेलैक। ओहिठामक लोकक व्यथा-कथा सुनि मोनमे भेलैक जे जाकऽ ओकरा सभकेँ बोल-भरोसक संग किछु मदतियो कऽ दिऐक। मुदा जकर डीह-डाबर बाढ़िक विनाशलीलासँ साले-साले बदलैत होइक आ ओकर राजा एहन विपत्तिकेँ प्राकृतिक विपदा कहि अहुरिया कटबा लेल छोड़ि दैक ओ कोन हुबा पर दौड़ि सकितय।

मुदा मिथिलावासी दू-चारिये दिन बाद प्रसन्न भऽ उठल जखन ई सुनबामे अयलैक जे सुनामी लहरिक आगमनकें राष्ट्रीय आपदा घोषित करा ओहिठामक स्थानीय प्रशासन अपन-अपन जनताक सेवा-सुश्रुर्षामे लागि गेल अछि। ओकरा तखन आर प्रसन्नता भेलैक जखन बिहारो सरकार अपन गरीबी बिसरि सुनामी पीड़ितकें 15 करोड़ टाका पठा दानशीलताक परिचय देलक।

एहि सभ बातकेँ लऽ कऽ फुचाइ मंडलक दलान पर तिलासंक्रान्ति दिन बेस घमर्थन भेल। फुचाइ बजलाह– संक्रान्ति दिन दही-चूड़ाक दर्शनो नहि भेल आ नेता सभ भरि पोख चूड़ा-दही भकोसि हमरा सभकें निमूह धन बुझि टिकटक बंटबारामे कुश्तम-कुश्ती कयलक। ओकरा सभकेँ ई बुझाइते ने छैक जे हमरा सभकें जाति-पातिमे बांटि कऽ ओ अपन गोटी लाल नहि कऽ सकत।'

बौका मिसर टोक दैत कहने रहथिन–'यौ मंडलजी, सभ बेर तँ हम सभ यैह विचारैत छी मुदा भोट बेरमे किएक बंटि जाइत छी'?

फुचाइ मंडल फनकैत बजलाह–'बंटैत-बंटैत तँ हमरा सभ खेत-खरिहान गमौलहुँ, भाइ-भैय्यारीक संबंध बिसरलहुँ, गामघरक समरसता धो-पोछि चटलहुं, बाढ़ि-दाहरमे डीहो-डाबर छोड़लहुँ। आब की विचार छह जे अगिला सुनामी बाढ़िमे जे देह-दशा बाँचल अछि तकरो गमा दी। हौ, पहिने हम सब बाँचब, दिन-दुनिया देखैत रहब तखने ने रडधुम्मस करब'।

'तँ की विचार मंडलजी, एहि बेरुका चुनावमे ककरा संग देबै। कहाँ दन नेता सभ जातिये-पातियेक गिनती पर चुनावी टिकट कटा रहल अछि। एहन स्थितिमे की कयल जाय।'

बौका मिसर मंडलजी दिस प्रश्नवाचक दृष्टिये तकैत पुछलनि। 'हौ, आब अस्तित्वक प्रश्न छह तेँ 'जातिपर ने पातिपर, जीवन-रक्षाक बात पर' जे ठठबा जोगर बुझबामे आबह तकरा गरा लगाबह आ जे घिसियौर कटेबाक फेरमे छह तकरा भुस्साथरि बैसाबह, आर की।'

बाढ़िक मारल, नवका चूड़ा आ दहीसँ बारल मिथिलाक सैकड़ो चौपालपर एहि कड़कड़ौआ जाड़ोमे एहने-एहने गपसप चलि रहल अछि। एक दिस विभिन्न पाटीक नेतालोकनि भोटरकेँ भेड़ा बुझि ओकरा अपना पक्षमे करबा लेल चाराक व्यवस्था कऽ रहल छथि तँ दोसर दिस मिथिलाक लोक फांड़ बान्हि अपन अस्तित्व रक्षा करबा लेल ठकना नेता सभकेँ बकानि पिअयबा लेल आपसमे गोलबंद भऽ रहल छथि।

(17.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

सड़क नहि तँ प्रवेश नहि

राजनीतिक दल सभमे टिकटक लेल भेल मारामारी आ आपसी उठापटक देखि ग्रामीण लोक सभकेँ चकविदोर लागल छैक। एहन-एहन दृश्यक वर्णन सुनि-सुनि कऽ सभकेँ बुझबामे आबि रहल छैक जे किएक नेता सभकेँ जुड़पित्ती उठल रहैत छैक ? किए कोनो नेता चैनसँ ने अपन क्षेत्रमे रहैत अछि आ ने कोनो काजे-बात पर ध्यान दैत अछि ? सभ सोचि रहल अछि जे कोनो क्षेत्र लेल कोनो पाटी देतैक तँ एक्केटा टा टिकट, तखन एते मुड़ी कटौअलि किएक ? आपसमे तसफिया कऽ कऽ किएक ने एक गोटाक नामपर सहमति होइछ ?

ओमहर पाटी सभक प्रदेश कार्यालयमे टिकटक छिना झपटी लेल रोब-दाबक प्रदर्शनसँ लऽ कऽ व्यापारी जकाँ टाका-पैसाक लेन-देन चलि रहल अछि। टिकट नहि भेटला पर पाटीक अदला-बदली भऽ रहल छैक तँ एमहर गामघरक चौक चौराहापर एही सभ बात पर जमि कऽ टीका-टिप्पणीक संग नेता द्वारा कयल जा रहल उपेक्षा आ गामघरक मांगपर बहस शुरू भऽ गेल अछि।

बचकुन झाक कहब छलनि-'किएक नहि जान देत टिकट लेल ई नेतबा सभ ? एक बेर टिकट भेटि गेलै आ सुतरि गेलै तँ मासे दिनक भीतर सूमो-बोलेरोसँ नीचाँ नहि उतरत, भने गामघरक सड़कक सभ माटि धूरा बनिकऽ किएक नहि उड़ि जाए।'

बच्चन यादव नहला पर दहला मारलक-यौ कक्का, अहाँ ठीके कहलिऐ, देखियौ ने एहीठाम। गाम जायवला सड़कक उद्घाटन कयलहा शिलापट्ट 10 वर्ष सँ मुंह बौने अछि सड़क बनबाक प्रतीक्षामे आ देखि लियनु नेताजीक घर भीतघरासँ महल बनि गेलनि। पटना आ दिल्लीमे मकान आ दोकान जे चकमका रहल छनि तकर तँ जोड़ा तकनहु नहि भेटत।'

-हौ, तोँ एतबे देखलहक तँ छाती फटैत छह। हम तँ तेहन बात कहबऽ जे ठकमुड़ी लागि जयतह। हम आ तोँ अपन नेनाकेँ 15 टके दूध देब से जुड़ितहि नहि अछि आ ओ अपन नेनाकेँ 15 टके लीटरक पानिसँ हाथ-मुंह धोअबैत छथि। की तँ बहरिया पानिसँ कोनो व्याधि ने भऽ जाइ।' परमेसर कामति टिपलक।

अरशद मियां सेहो बाजि उठल- अरे, हमरे सुनो।' अपना हियां 15 गो गांओपर

एगो थाना है जेकरामे चार गो सिपाही आ एगो दरोगा है। इलाकामे केतनो खूब-खराबी हो जाय, डकैती हो जाय-कोइ देखेवला नइं है। लेकिन नेताजी के हियां देखो, एक देह पर दू-दू गो सिपाही डोलडाल करता है। गांओमे एगो पलटन है तऽ शहरमे दूसरा आ जऽरे घुमेवला पलटन का तऽ बाते अउर है। लोगबाग कहता जे जमींदारी चलि गया मगर हम तऽ कहते हैं जेतना पहिलुका नेता है, जे है आ जे बनेगा सब तऽ जीमंदारे है न हियांक। है कि नइं आ हमलोग सबके तऽरे एहिना पिसाते रहेंगे। नऽ।'

बचकुन झा बातकेँ समटैत कहलथिन–हौ, ई स्थिति किएक बनलै से तोहूँ सभ जनैत छह आ हमहूँ। हम सभ अपन-अपन स्वार्थमे लागि गेलौं तेँ ने। चुनावक समय मे नेताकेँ आसामी बुझि लैत छिए तेँ ने। ओ सभ हमरा सभकेँ किछु-किछुक प्रलोभन दैए आ हम सभ फंसि जाइ छी आ पांच वर्ष तक अहुरिया कटै छी। कहऽ तँ एहि सड़कक उद्घाटन दस वर्ष पूर्व भेलै मुदा ई एखन धरि नहि बनल अछि। हम सभ आश्वासनक धुरा फंकैत अबै- जाइ छी आ नेता सभ हमरे तोरे पाइपर सूमो-बोलेरो पर उड़ैत अछि। आखिर कतेक दिन एना धुरा फंकैत रहबह।"

अरशद, बच्चन आ परमेश्वर एक्के बेर बाजि उठल– तँ हमरा सभ बूते की कयल हैत?''

–हौ, हम सभ चाहब तँ कि नइं हैत। जेना ओ सभ टिकट लेल पाटी आफिसमे नाक दरड़ि रहल छह तहिना भोट लेल हमरो-तोरो लग नाक दरड़तह, खेखनियां करतह। जँ हम सभ आपसमे मेल राखी आ गामक चौक-चौराहा पर सरेआम घोषणा कऽ दी जे 'सड़क नहि तँ भोट नहि, काज नहि तँ प्रवेश नहि' तँ नेता सभकेँ नाक दरड़ि कऽ एहि सड़ककेँ बनाबहि पड़तनि।'

एतबा कहैत बचकुन बाबू गाम दिस जायवला सड़क पर बढ़ि गेलाह।

मिथिलांचलक सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी, सहरसा, सुपौल, दरभंगा आदि जिलामे निर्माणाधीन सड़कक शिलापट्ट एहि बेरुक चुनावमे मतदाताक दिमाग मे मुद्दा बनिकऽ उभरि रहल अछि आ लोक बुझि रहल अछि जे नेता सभ अपना सुविधा अरजबा लेल शिलापट्ट दऽ कऽ निचेन भऽ जाइत अछि। एहि बेरुका चुनावमे निर्माणाधीन सड़कक ई शिलापट्ट सभ नेता लोकनिक नाकमे कौड़ी बन्हौतनि तकर तैयारी चलि रहल अछि।

(19.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

चुनाव नइं ई खेला छै

कैक वर्षसँ मिथिलाक लोक अपन खेती-बाड़ीसँ कमा कऽ अथवा उद्योग-धंधामे लागि-भिड़ि कऽ अपन गुजर नहि कऽ पबैत अछि। ओहिठामक लोक पंजाब-हरियाणासँ आबयवला मनिऑर्डर पर बकोध्यानम लगौने रहैछ। कारण अपना ओतऽ रौदी-दाहीक करणे खेती-बारी तँ सुभ्यस्त रूपें नहिये भऽ पबैत छैक उद्योगो धंधा नहि रहबाक कारणे अपन श्रम नहि बेचि पबैछ। परिणाम ई होइत छैक जे पूरा परोपट्टाक युवाशक्ति रोजगारक खोजमे अपन घर आंगन छोड़ि बहरा जाइछ आ ओतऽ रहि जाइछ परजीवी वृद्ध, नेना आ स्त्रीगणसमाज। ई परजीवी समाज विकास सँ वंचित गाममे कहुना कऽ दिन कटैत अछि आ अपन बचाव लेल छोटभैया नेता सभक छांहसँ छीह करैत रहैत अछि। ओ जनैत छथि जे हुनकर हक आन खा जाइत छनि, अधिकारक स्वरकेँ दबा देल जाइत छनि। एहि स्थितिमे ओ सभ मोनेमन कूही होइत रहैत छथि आ अपन आक्रोश कखनो कऽ धीयापूतापर उतारैत छथि तँ कखनो ककरोपर।

काल्हिये तँ कंटीर मंडल खोंखिया उठल छलाह अपन दुनू पोतापर जखन ओ सभ खेल करैत हुनक खाटक तिरपेच्छन करैत गाबि रहल छल– चौक-चौराहापर मेला छै– चुनाव नइं ई खेला छै। गली-गलीमे शोर छै- नेतबा सभ भगोड़ छै।

'किए रे, पढ़बे-लिखबे से नइं जे रड़धुम्मस मचौने छें। जो भाग स्कूल, भऽ गेलै बेर। कंटीर खोंखिअयलाह– बड़का पोता नहुंए सँ बाजल-बाबा अहांकेँ बूझल नइं अइं जे चुनावक कारणे स्कूल बंद भऽ गेलै। आब एक्के बेर फगुआक बाद खुजतै। मास्टर साहेब गेलखिन चुनावमे। दोसरो टुनकल-बाबा, यौ, एहि बेर जेबै ने भोट खसबऽ। हमहूं अहां संगे जायब।' कंटीर पड़ले-पड़ले लोहछैत बजलाह- सपरतीव ने दखियनु भोटमे जयताह। रौ, हमरा चलले नइं होइए आ तोहर माय चोर-उचक्काक बीचमे जयतहु नहि। बाप-पित्ती पेट खातिर पंजाबे ओगरने छउ। जेबें ककरा संगे। चल जो भाग एहिठामसँ ने तँ देबौ दू बेंत एखने।'

नेना कनैत आंगन दिस बढ़य लागल कि कोनटा लागलि कनियांक आंखिमे नोर भरि गेलनि। नेनाकेँ बौंसौत कहलथिन- नइं कानू बाउ, बाबू औताह तँ घुमा देताह। हटनीवाली देयादिनी सभ देखैत रहथिन। कनियां लग सहटैत बजलीह- हे यै कनियां,

''वैह छै अध्यक्ष-सचिवक कार्यालय जाहिठामसँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक भाग जगैत छै। एखन धरि मिथिलाक जतेक काज भेलैक अछि से एंही कार्यालयक आदेशसँ, प्रस्तावसँ आ सहमतिसँ। नहि विश्वास होअय तँ जाकऽ देखियौ गऽ दक्षिणबरिया कार्यालयक कोठरीमे राखल दस्तावेज सभकँ।''

''अहाँकँ होइए जे हम फूसि कहैत छी। नइं यौ, हम फूसि किएक बाजब, आब सभटा इतिहास छपियो गेल छै। हे, खाली एक्के टा बात ध्यान राखब जे ककरो लिखलाहाकँ ककरोसँ मिलान नहि करबै। जँ मिलान करऽ लागब तँ ओहिना फंसि जायब जेना पछिला बेर मैथिलीक इतिहासक मंथनमे भेल रहय। ओना ई बात अहाँ जानि लिअऽ जे एखन धरि ई नहि फरिछा सकलैक अछि जे एकर संस्थापक के? मोटा-मोटी यैह बुझि लियऽ जे जते पुरना बांचल सदस्य, ताहूमे जे जोरगर, एखन वैह छथि एकर नियंता। बुझलहुँ कि ने!''

''चलू एतऽसँ। क्यो देखि लेत तँ कहत जे घरपैठिया अछि आ रबाड़ि देत। आ जँ प्रसन्न भऽ जायत तँ परिचय-पात होइते चंदाक रशीद बढ़ा देत। आखिर किएक ने बढ़ाओत-विद्यापतिक नाम पर रड़धुम्मस जे करबाक छैक। विद्यापतिक बर्खी जे छनि।''

''हे ई देखू, ई छैक पुस्तकालय। एहिमे दातालोकनि द्वारा देल गेल साहित्यकार लोकनिक चित्र टांगल छनि, दातालोकनि द्वारा देल गेल आलमीरामे दातेलोकनि द्वारा देल गेल अमूल्य पोथीयो सभ दर्शनार्थ राखल अछि। मुदा एहि पोथी-पत्रिकाक अभाग छैक जे ई लोककँ पढ़य लेल नहि भेटैत छैक। हँ, सांझूपहर एहिठाम आबयवलाक भाग्य नीक रहैत छैक जे एक कप चाह अवश्य भेटि जाइत छैक।

..की चाहक नाम सुनि अहूँक मोन चपचपा गेल। नइं मानबै, चाह पीबे करबै चेतना समितिक।

..छोड़ू चाहक झंझटि। एहि फेरमे पड़ब तँ आन दृश्य नहि देखि सकब। कारण एहि चौपाड़ि पर दूइये घंटाक खेल होइत छैक आ 22 घंटा चैनक बंसी बजैत छैक। अर्थात् जेना 2 घंटा 22 घंटाक बरोबरि होइत छैक तहिना दूइये पदाधिकारी एकरा टहलऽबै छै, चलबै छै आ दौड़बै छै। बाकी सभ गोटे ओहिना मुड़ी डोलबै छै जेना माटिक खेलौनाक बीचमे बुढ़बा मूड़ी डोलबै छै।''

विश्वास नइं ने भेल हमर बात पर तँ चलू देखबै छी स्टेज पर। देखियौ, ओतय पूरा कार्यकारिणी बैसल छैक। अपने आँखिये देखि लियऽ कोना निर्णय होइ छै एतय।

* * * *

''अयं यौ के छथि नेपालवला नाटककार?''

-''महेन्द्र मलंगिया दिया पूछै छी सर।''

-हँ, हँ, ठीके मोन पाड़लहुँ। दऽ दियौ ओही नाटककारकँ एहि बेरूक चेतना पुरस्कार।'

-से तँ ठीक छै सर, मुदा हुनकासँ सीनियर.....।

छोड़ू, अहाँ की बूझबै। ककरो तँ देबै करबै, छोट होइ की पैघ। अरे, एहिसँ भारत-नेपाल दुनूमे चेतना समितिक ढ़ोल पिटा जयतै। की यौ, हम बेजाय कहै छी।'

-नइं सर, अहाँ तँ बड़ दूर तक सोचि लै छिऐ।''

-चलू ई झंझट खतम भेल। अहीमे अहाँ सभ माथापच्ची करैत रहितहुँ, हम फरिछा देलहुँ। आ सुनू एहि बेरुका कवि सम्मेलनमे ओहन लोककँ नहि बजायब जे बेसी मान-दान ताकय। ओना हमरा पूछी तँ कवि-सम्मेलने बन्न भऽ जयबाक चाही। लोक रहिते ने छैक ओहिकालमे। अनेरे पांच-दस हजार टाका खर्च भऽ जाइए।''

-से तँ सर ठीके कहै छिऐ, मुदा कवि सम्मेलन तँ होयबेक चाही।

-'होयबेक चाही। होयबाक चाही तँ टाका जुटबियौ ने। संस्थाकँ टाका चाही, टाका। खाली अहाँ सन कवि-साहित्यकारेक जुटान भऽ गेलासँ संस्था नहि चलै छै। टाका अनियौ, तमाशा देखू।'

-छोड़ू ने कविजी, सर जखन कहिये देलथिन तँ विचार करू ओहि पर। हँ, एकटा रस्ता निकालल जाय सर। एहि बेर, बहरबैया कविकँ नहि बजाओल जाय। टको कम लागत आ कवि-सम्मेलन करयबाक छुतको छूटि जायत।''

-हँ, सर हिनकर विचार उत्तम छनि। हमर एकटा परामर्श जे एहिबेर मैथिली अकादेमीकँ कवि-सम्मेलनक 'स्पाँसर' बनाओल जाय। पाइ ओ देत नाम हमरा सभक होयत।''

-'नहि यौ! मैथिली अकादमीकँ छोड़ू एहि बेर। ओकर पदाधिकारी बड़ पैघ घाघ अछि। देखलिऐ नहि पछिला बेर, कवि-सम्मेलनक नाम पर पांच हजार गछलक मुदा देलक दूइये हजार। बाँचत कतऽसँ डांड़ेसँ घाटा लागि गेल छल।'

-ठीक कहै छथि कैशियर साहेब। एहि बेर एहन व्यक्तिकँ संयोजक बनाउ

जे पाइयो आनय आ एहन कवि सभकँ बजाउ जे कवि कम कविकाठी बेसी होअय। बुझलहुँ की नहि हमर इशारा?

– बुझि गेलहुँ सर। एहि लेल 'नऽव कविता'क विशेषज्ञकँ भार देल जाय सर। हुनका किछुओ सलाह देबनि शिरोधार्य कऽ लेताह। मंचपरसँ धकिया कऽ कात कऽ देबनि परवाहि नहि करताह आ कखनो काल किछु कहियो देबनि तँ देह झारि लेताह सर।''

–ठीक छै। सुनू विचारगोष्ठीमे एहि बेर एहन विषय राखू जे सब अपने तनने रहय। जकरा जे फुराइ से बाजय। अराजकताक एहि समयमे जतेक विषय होअय से दऽ दियौ। विद्वान सभक एकमत कोनो विषय पर नहि रहलैक अछि, से ध्यानमे रखैत सभकँ फराक-फराक विषय दऽ दियौ जाहिसँ श्रोता सेहो अकछा कऽ जल्दी चल जाय।'

–से किएक सर?

–दूर जी, अहूँ हद्द लोक छी। सभ बेर भोजनावकाशमे सय सौ उपर लोक भऽ जाइ छै से नहि देखै छिऐ। आखिर अपन बजटे देखिये ने विषय राखब। ने एकटा विषय रहतै आ ने सभक समर्थक जमल रहत। जकर-जकर भाषण भेल जयतै ओ समर्थक संग बहरायल जायत।''

–'सर अहाँक सोचक जबाब नहि अछि।'

– छोड़ू ई सभ लल्लो-चप्पो। आब आऊ सांस्कृतिक कार्यक्रम पर। एना करू एहि बेर जे कहियो ने भेल होअय। यैह हमरा सभक कार्यक्रमक मुख्य अंश अछि। एकर भार तीन गोटेकेँ दऽ दियनु। ई लोकनि हमरासँ राय-विचार करैत सभटा सम्हारि लेताह। अहाँ सभ निश्चित रहू। आ हे, उद्घाटन सत्रक भार हमरा पर छोड़ि दियऽ। हम सभटा तय कऽ देब।''

* * * *

''किए भागल जाइ छी यौ साहित्यकार महोदय। एखन तँ मारते रास विषय बांचले अछि। समितिक कैकटा कोनामे घूमब बाकी अछि। छपलाहा किताब सभमे दीवार लागल जाइ छै से देखब बांकी अछि। चंदामे असूलल पैसाक जे बेरबादी होइ छै तकर हिसाब देखब बांकी अछि। मैथिलक एहि शीर्ष संस्थाक विशाल अट्टालिका कोना पाइ-कौड़ीक अछैत बरसातमे दहो-बहो नोंरे कनैत अछि से देखब बांकी अछि।''

...नहि भागू यौ, यात्रीजी एकर स्थापना कऽ भागि गेलाह। आइ हुनकर फोटो टांगल छनि मुदा संस्थापकक दावेदार कैक गोटे भऽ गेलाह। अहूँ जँ भागि जायब तँ एहि मन्दिरक दर्शन के करत? मिथिला भवन जे सांस्कृतिक भवन नहि भऽ मायावी घर बनबाक तैयारीमे लागल अछि तकरा के देखतै?.. आयल रही आ कहने रही जे पर्वक तैयारी आ पर्वो देखब, मुदा अहाँ बीच्चेमे भागि रहल छी। एखन तैयारीक रिहर्सलो ने देखलहुँ आ पड़ायल जाइत छी।

जाइत छी तँ जाउ, मुदा ई जानि लिअऽ जे कतबो लिखब, कतबो पढ़ब, अहूँक वैह गति होयत जे विद्यपतिक भेलनिहे। अहूँ ओहिना कोनो कोनटामे मुँह नुकौने नुकायल रहब। नाम सभ अवश्य लेत, सप्पत भने अहींक खायत, संकल्पो अहींक नामपर लेत, मुदा करत वैह जे ओकरा मोन होयतैक। पड़ाइत रहब तँ एहिना पड़ाइते रहि जायब।

हे, हम रोकबो ने करब, बुझयबो ने करब आ ने अहाँ सम्मानित होइ ताहि लेल प्रयासे करब। ककरो बेगरता नइं छैक तँ हमहीं किए उक्खड़िमे मुंह दी, पड़ौआ संग दऽ अपन धोती ढील करी। हम दर्शन करा देलहुँ अहाँ सुदर्शन नहि बनि सकलहुँ तँ हमर कोन कसूर?.....

(6 नवम्बर, 2003, समय-साल विशेष बुलेटिन)

हम मैथिल छी !

अखबारमे एकटा विज्ञापन आयल रहैक-'हर उम्र के उम्मीदवार मनपसंद नौकरी और मनचाहा वेतन के लिए सम्पर्क करें।' ओहि विज्ञापनमे रोजगारदाताक पताक संग-संग ईहो विश्वास दिआओल गेल रहैक– 'रोजगार देने की पूर्ण गारंटी। अवसर का लाभ उठायें, देश को खुशहाल बनायें।

ई विज्ञापन की निकलल गामघरमे शोर मचि गेल। जतऽ एकटा नोकरी लेल मारामारी होअय, ओहिठाम नोकरीक सबजना हकारसँ सभकेँ छगुन्ता लागल छलैक जे आखिर ई कोन व्यवस्था छैक जे एक्के बेरमे बेरोजगारक समुद्रकेँ पीबि जयबा लेल उगि आयल छैक। ककरो विश्वासे ने होइक जे ई विज्ञापन सत्य छैक। विश्वासो कोना होउक। बिहार सन प्रदेशमे जे नोकरी होइत छैक से बिनु (काटर) दहेज लेने नहि। जेहन नोकरी तेहन काटर। चाहे ओ सरकारी होअय वा प्राइवेट। सरकारीमे 'रेट' रहै छैक गैर सरकारीमे 'फेट'। जकर जतऽ लहि जाय। योग्यताक कोनो प्रश्ने नहि, ओहिना जेना वरागत लेल बेटीक सुन्दरता, योग्यता आ कुल-शीलक कोनो प्रश्ने नहि रहि गेल छैक।

एहन स्थितिमे मनमाफिक नोकरी आ दरमाहाक ई सबजना हकार-बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक जोगार कोना संभव छै, से ककरो बुझबामे नहि आबि रहल छलै। मुदा एहि विज्ञापन दिससँ मुंह मोड़ि लेल जाय सेहो संभव नहि छलै। कारण, नोकरी आ दरमाहे तकक प्रश्न रहितैक तँ एकटा बात छलै, देशकेँ खुशहाल बनयबाक बात सेहो रहैक। संग-संग अवसरक लाभ उठयबाक बात सेहो कहल गेल रहैक।

मिथिलाक लोक एहि दुनू बातपर बड़ सतर्क रहैत अछि। अवसरक लाभ कोना लेल जाय से ओ नीक जकाँ जनैत अछि। बेटीक विवाहक बात होअय वा श्राद्धकर्मक। अड़ोसी-पड़ोसी, सर-कुटुम्बक खेत-खढ़िआन भरना लेबऽ मे एहिठामक लोक एकोरत्ती नहि हिनछिनाइत अछि। बर-बीमारी आ लाचारीमे तँ अगते सूदि लऽ कर्ज देबऽमे नहि चुकैत अछि। रहल बात आपसी प्रेमभाव आ सौहार्द बढ़यबाक बात तँ एहिठामक लोक बापसँ बेटाकेँ मोड़ि कऽ, भाइसँ भाइकेँ तोड़ि कऽ कखनो प्रेमभाव बनयबा लेल आतुर रहैत अछि।

आ जहाँ धरि देशकेँ खुशहाल बनयबाक बात छैक तँ ओ देशमे सभ दिनसँ एक नम्बरपर अछि। सवा कट्ठाक डीह अछि तँ ओहीसँ तृप्त। 'न माधो से लेना, न उधो के देना।' खुशहाली अनबाक भार ओ कहियो ने लेलक। जानथि बाबा बैद्यनाथ आ कि जानय सरकार। ने हरहर, ने खटखट। जालमे फंसि गेल तँ रहूक मूड़ा, बाढ़िमे

दहा गेल तँ राहतवला अगबे अखड़ा चूड़ा। दुनू स्थितिमे महो-महो।

एहन मानसिकतामे घर बैसल ई नोकरी आ मनमाफिक दरमाहाक ई प्रस्ताव ठीके 'अनधन लक्ष्मी घर आउ' फकराकेँ सद्य: चरितार्थ करबा लेल सोझांमे उपस्थित छल। प्रश्न ई छल जे एहि विज्ञापनक सत्यताकेँ भजारबा लेल के सभसँ पहिने आगां आबय ? युवक सभ जखन माथा-पच्चीकऽ कऽ थाकि गेल तँ चलि पड़ल करिया कक्का ओतऽ।

करिया कक्का भिन्ने दलानपर बैसल अपन बीतलाहा जीवनक सिनेमा शून्यमे तकैत देखि रहल छलाह। कोना ओ अपन भाइ-भैयारीकेँ पढ़यबा लिखयबा लेल सभ सख-सेहन्ता बिसरि गेलाह। कोना ओ गाममे रहि गामक टंटा करैत रहलाह, कोना गामक अस्थिर चित्तकेँ शान्त करबा लेल अपन दलानकेँ चौपाल बना अपना हृदयकेँ चाक करैत रहलाह। जावत वयस रहनि तावत सभकेँ कयलनि। आ आबो सभ राय टा लेबऽ अबैत छनि मुदा ई क्यो नहि पुछैत छनि जे ओ कोना दिन खेपैत छथि।

एकाएक ओ शून्य दिस ताकब छोड़ि प्रफुल्ल भऽ उठलाह। हुनको मोन पड़ि अयलनि नोकरीक विज्ञापनवला बात। मोनमे अयलनि-किएक ने ओहो एक बेर अपन भाग्य अजमा लेथि। कहबीयो छैक-साठा तब पाठा'। आगां किछु आर सोचितथि कि सोझांमे चारि-पांच चुवक आबि ठाढ़ भऽ गेलनि।

'आबह, आबह धीरू की बात ? केमहर अयलह अछि।' करिया कक्का आयल युवकमेसँ एकटाकेँ टोकलनि।

–की कक्का अहूँ ई सभ पूछि सभ बेर लज्जित कऽ दैत छी।– धीरू माथा नीचां कयने बाजल।

'हौ बात तँ कहह, भाभट ककरासँ ?' कक्का ठामहि दगलनि।

'बात ई छै कक्का जे ओ नोकरीवला विज्ञापन जे निकलल छै ताहिपर अहाँक राय चाही। की करी हम सभ से रास्ता देखाउ।– सुरेन्द्र आस्तेसँ बाजल।

'हाथ कंगन को आरसी का। अरे अवसर आयल छह। जाह आ भजारि लैह। जवानीमे ई डेग तँ स्वयं उठबऽ पड़तऽ।' -कक्का युवक सभकेँ ललकारलनि। मुदा ओहो सभ खेलायल छल। बाजि उठल रमेसरा-"बात ई नहि छै कक्का जे के जायत के नहि। बात ई छै जे ई विज्ञापनवाला ठीके नोकरी दै छै कि ठकै छै से भजारयवला कोनो ठेकनगर लोककेँ पहिने जयबाक चाही से हम सभ चाहैत छी।'

'अहाँसँ बेसी बोधगर कहाँ क्यो अछि जे ई भजारि सकत। तेँ सभ सँ पहिने अहीं जाइ से हमरा सभक आग्रह।' जावत करिया कक्का किछु कहथि तावत युवक दल दिससँ हरिया अपन फैसला सुना देलक आ हुनक मनाइयो लेलक जे सभसँ पहिने वैह जाथि ओतऽ। हुनका ईहो कहल गेलनि जे वयस, योग्यता कोनो बाधा नहि छैक तेँ ओ गामक खुशहाली आ अवसरक मांगकेँ देखैत इन्कार नहि करथि। नोकरीक पहिल लाभ वह लेथि। ई सभ कहि युवक दल चलि गेल।

करिया कक्काकेँ फेर एक बेर जोश भरि अयलनि। गामक चिन्ता, मिथिलाक चिन्ता घेरि लेलकनि। हुनका लागऽ लगलनि जे बिना हुनका नोकरी धयने मिथिलाक

कल्याण नहि भऽ सकतैक। से सोचि आनन फाननमे कुर्ता पहिरि कान्हपर गमछा धऽ विदा भऽ गेलाह।

विज्ञापित नोकरीवला स्थान पर पहुँचलाह तँ क्यो कतहु नहि। घोर आश्चर्य भेलनि जे एतेक रोजगार देबऽवला ओतय एक्को गोटे बाहरमे नहि अछि, जखनकि बेरोजगारक नियोजनालयमे कैकटा पतियानी हरदम लागल रहैए। फेर ओ कार्यालयमे झंकलनि तँ देखलनि जे एक गोटे कुर्सीपर बैसल ओंघा रहल अछि। ओ केबाड़ खटखटौलनि तँ ओ अनमनस्क भावें बाजि उठल–'एखन धरि बेरोजगार लोक बाँचले अछि!'

कक्का भीतर गेलाह आ ओकरा नमस्कार कयलथिन। ओ आदरपूर्वक हुनका बैसौलकनि आ पुछलकनि– कहल जाओ अपनेकेँ केहन नोकरी चाही, कतेक दरमाहा चाही आ कतय नोकरी करय चाहब ?

करिया कक्काकेँ लगलनि जे फुसिये लोक नोकरीक नामपर कनैत अछि। मुदा जँ कि ओ एकटा बेरोजगारक रूपमे नोकरीक स्थिति भजारय आयल छलाह तेँ अपन शरीरकेँ तनैत बजलाह– हम मैथिल छी, तेँ हमरा जँ घरे लग नोकरी भेटि जाय तँ उत्तम आ जहाँ धरि दरमाहारक प्रश्न अछि तँ हमर वयस, हमर अनुभव आ हमर आवश्यकताकेँ देखैत दरमाहाक व्यवस्था कऽ देल जाय। ओ व्यक्ति मुस्कुरायल आ करिया कक्काक नजरि पर नजरि फेरैत बाजल– अहाँक नोकरी अहींक दरबज्जेपर हम दैत छी। अहाँक दरमहो हम अहींक मनमाफिक निश्चय कऽ दैत छी। खाली एकटा कष्ट देबऽ चाहैत छी।'

'से की ? कहल जाओ, धखयबाक कोनो बात नहि–' करिया कक्का घर आयल नोकरीकेँ हाथसँ नहि जाय देबाक लक्ष्यकेँ सन्धानैत बात आगाँ बढ़ौलनि।

'हमरा जनैत अहाँ ओतऽ बहुतो बेरोजगार युवक अबैत होयत आ राय माँगैत होयत।'–ओ व्यक्ति कहलक। हँ–हँ, पूरा परोपट्टाक युवक बिनु हमर रायक कोनो काज नहि करैत अछि– करिया कक्का हड़बड़ाइत बाजि उठलाह।

'तँ कमाउ ने भरि पोष। जाहि तरहक राय ओ मांगय ताहि तरहक एकटा फीस बान्हि दियौक। जँ दिनमे दसो टा सुतरि गेल तँ बुझू जे कन्तोरी भरबामे समय नहि लागत आ कैकटा नोकरीहाराकेँ अहाँ घरे बैसल–बैसल नोकरी देबऽ लगबनि।' ओ व्यक्ति कनेक बिलमल आ पुनः बाजि उठल–अहाँ मैथिल छी, गप्पक खेती आ गप्पक कमाइ दुनू घर बैसले कऽ सकैत छी। एहिमे ने पूंजी लागत आ ने मेहनति। हँ, तखन एकटा बात याद राखब जे एहि रोजगारसँ जे आमदनी होयत ओहिमे सँ 25 प्रतिशत इमानदारीसँ पठा देल करब तखन ने हम अपनो नोकरी कऽ सकब आ अनको मनपसिन्द नोकरी दऽ सकबैक।'

करिया कक्काकेँ नोकरी कोना भेटैत छैक से भांज लागि गेल रहनि। ओ ओतऽसँ गाम दिस विदा भऽ गेलाह। भरि रस्ता हुनका अफसोच होइत रहलनि जे मैथिल होइतो ओ एतेक वयस धरि किएक बेरोजगार बैसल रहि गेलाह ?

चुनावी तुक्का

जीवन रक्षाक बात पर

भारतक तटवर्ती इलाकमे सुनामी लहरि कि आयल मिथिलाक लोक पुनः सिहरि उठल आ ओकर आँखि डबडबा गेलैक। ओहिठामक लोकक व्यथा-कथा सुनि मोनमे भेलैक जे जाकऽ ओकरा सभकेँ बोल-भरोसक संग किछु मदतियो कऽ दिऐक। मुदा जकर डीह-डाबर बाढ़िक विनाशलीलासँ साले-साले बदलैत होइक आ ओकर राजा एहन विपत्तिकेँ प्राकृतिक विपदा कहि अहुरिया कटबा लेल छोड़ि दैक ओ कोन हुबा पर दौड़ि सकितय।

मुदा मिथिलावासी दू-चारिये दिन बाद प्रसन्न भऽ उठल जखन ई सुनबामे अयलैक जे सुनामी लहरिक आगमनकें राष्ट्रीय आपदा घोषित करा ओहिठामक स्थानीय प्रशासन अपन-अपन जनताक सेवा-सुश्रुर्षामे लागि गेल अछि। ओकरा तखन आर प्रसन्नता भेलैक जखन बिहारो सरकार अपन गरीबी बिसरि सुनामी पीड़ितकें 15 करोड़ टाका पठा दानशीलताक परिचय देलक।

एहि सभ बातकेँ लऽ कऽ फुचाइ मंडलक दलान पर तिलासंक्रान्ति दिन बेस घमर्थन भेल। फुचाइ बजलाह– संक्रान्ति दिन दही-चूड़ाक दर्शनो नहि भेल आ नेता सभ भरि पोख चूड़ा-दही भकोसि हमरा सभकें निमूह धन बुझि टिकटक बंटबारामे कुश्तम-कुश्ती कयलक। ओकरा सभकेँ ई बुझाइते ने छैक जे हमरा सभकें जाति-पातिमे बांटि कऽ ओ अपन गोटी लाल नहि कऽ सकत।'

बौका मिसर टोक दैत कहने रहथिन– 'यौ मंडलजी, सभ बेर तँ हम सभ यैह विचारैत छी मुदा भोट बेरमे किएक बंटि जाइत छी'?

फुचाइ मंडल फनकैत बजलाह–'बंटैत-बंटैत तँ हमरा सभ खेत-खरिहान गमौलहुँ, भाइ-भैय्यारीक संबंध बिसरलहुँ, गामघरक समरसता धो-पोछि चटलहुं, बाढि-दाहरमे डीहो-डाबर छोड़लहुँ। आब की विचार छह जे अगिला सुनामी बाढ़िमे जे देह-दशा बाँचल अछि तकरो गमा दी। हौ, पहिने हम सब बाँचब, दिन-दुनिया देखैत रहब तखने ने रड़धुम्मस करब'।

'तँ की विचार मंडलजी, एहि बेरुका चुनावमे ककरा संग देबै। कहाँ दन नेता सभ जातिये-पातियेक गिनती पर चुनावी टिकट कटा रहल अछि। एहन स्थितिमे की कयल जाय।'

बौका मिसर मंडलजी दिस प्रश्नवाचक दृष्टिये तकैत पुछलनि। 'हौ, आब अस्तित्वक प्रश्न छह तेँ 'जातिपर ने पातिपर, जीवन-रक्षाक बात पर' जे ठठबा जोगर बुझबामे आबह तकरा गरा लगाबह आ जे घिसियौर कटेबाक फेरमे छह तकरा भुस्साथरि बैसाबह, आर की।'

बाढ़िक मारल, नवका चूड़ा आ दहीसँ बारल मिथिलाक सैकड़ो चौपालपर एहि कड़कड़ौआ जाड़ोमे एहने-एहने गपसप चलि रहल अछि। एक दिस विभिन्न पाटीक नेतालोकनि भोटरकेँ भेड़ा बुझि ओकरा अपना पक्षमे करबा लेल चाराक व्यवस्था कऽ रहल छथि तँ दोसर दिस मिथिलाक लोक फांड़ बान्हि अपन अस्तित्व रक्षा करबा लेल ठकना नेता सभकेँ बकानि पिअयबा लेल आपसमे गोलबंद भऽ रहल छथि।

(17.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

सड़क नहि तँ प्रवेश नहि

राजनीतिक दल सभमे टिकटक लेल भेल मारामारी आ आपसी उठापटक देखि ग्रामीण लोक सभकेँ चकविदोर लागल छैक। एहन-एहन दृश्यक वर्णन सुनि-सुनि कऽ सभकेँ बुझबामे आबि रहल छैक जे किएक नेता सभकेँ जुड़पित्ती उठल रहैत छैक ? किए कोनो नेता चैनसँ ने अपन क्षेत्रमे रहैत अछि आ ने कोनो काजे-बात पर ध्यान दैत अछि ? सभ सोचि रहल अछि जे कोनो क्षेत्र लेल कोनो पाटी देतैक तँ एक्केटा टा टिकट, तखन एते मुड़ी कटौअलि किएक ? आपसमे तसफिया कऽ कऽ किएक ने एक गोटाक नामपर सहमति होइछ ?

ओमहर पाटी सभक प्रदेश कार्यालयमे टिकटक छिना झपटी लेल रोब-दाबक प्रदर्शनसँ लऽ कऽ व्यापारी जकाँ टाका-पैसाक लेन-देन चलि रहल अछि। टिकट नहि भेटला पर पाटीक अदला-बदली भऽ रहल छैक तँ एमहर गामघरक चौक चौराहापर एही सभ बात पर जमि कऽ टीका-टिप्पणीक संग नेता द्वारा कयल जा रहल उपेक्षा आ गामघरक मांगपर बहस शुरू भऽ गेल अछि।

बचकुन झाक कहब छलनि-'किएक नहि जान देत टिकट लेल ई नेतबा सभ ? एक बेर टिकट भेटि गेलै आ सुतरि गेलै तँ मासे दिनक भीतर सूमो-बोलेरोसँ नीचाँ नहि उतरत, भने गामघरक सड़कक सभ माटि धूरा बनिकऽ किएक नहि उड़ि जाए।'

बच्चन यादव नहला पर दहला मारलक-यौ कक्का, अहाँ ठीके कहलिऐ, देखियौ ने एहीठाम। गाम जायवला सड़कक उद्घाटन कयलहा शिलापट्ट 10 वर्ष सँ मुंह बौने अछि सड़क बनबाक प्रतीक्षामे आ देखि लियनु नेताजीक घर भीतघरासँ महल बनि गेलनि। पटना आ दिल्लीमे मकान आ दोकान जे चकमका रहल छनि तकर तँ जोड़ा तकनहु नहि भेटत।'

-हौ, तोँ एतबे देखलहक तँ छाती फटैत छह। हम तँ तेहन बात कहबऽ जे ठकमुड़ी लागि जयतह। हम आ तोँ अपन नेनाकेँ 15 टके दूध देब से जुड़ितहि नहि अछि आ ओ अपन नेनाकेँ 15 टके लीटरक पानिसँ हाथ-मुंह धोअबैत छथि। की तँ बहरिया पानिसँ कोनो व्याधि ने भऽ जाइ।' परमेसर कामति टिपलक।

अरशद मियां सेहो बाजि उठल- अरे, हमरे सुनो।' अपना हियां 15 गो गांओपर

एगो थाना है जेकरामे चार गो सिपाही आ एगो दरोगा है। इलाकामे केतनो खूब-खराबी हो जाय, डकैती हो जाय-कोइ देखेवला नइं है। लेकिन नेताजी के हियां देखो, एक देह पर दू-दू गो सिपाही डोलडाल करता है। गांओमे एगो पलटन है तऽ शहरमे दूसरा। आ जऽरे घुमेवला पलटन का तऽ बाते अउर है। लोगबाग कहता जे जमींदारी चलि गया मगर हम तऽ कहते हैं जेतना पहिलुका नेता है, जे है आ जे बनेगा सब तऽ जीमंदारे है न हियांक। है कि नइं आ हमलोग सबके तऽरे एहिना पिसाते रहेंगे। नऽ।'

बचकुन झा बातकेँ समटैत कहलथिन-हौ, ई स्थिति किएक बनलै से तोहूँ सभ जनैत छह आ हमहूँ। हम सभ अपन-अपन स्वार्थमे लागि गेलौं तेँ ने। चुनावक समय मे नेताकेँ आसामी बुझि लैत छिए तेँ ने। ओ सभ हमरा सभकेँ किछु-किछुक प्रलोभन दैए आ हम सभ फंसि जाइ छी आ पांच वर्ष तक अहुरिया कटै छी। कहऽ तँ एहि सड़कक उद्घाटन दस वर्ष पूर्व भेलै मुदा ई एखन धरि नहि बनल अछि। हम सभ आश्वासनक धुरा फकैत अबै- जाइ छी आ नेता सभ हमरे तोरे पाइपर सूमो-बोलेरो पर उड़ैत अछि। आखिर कतेक दिन एना धुरा फंकैत रहबह।''

अरशद, बच्चन आ परमेश्वर एक्के बेर बाजि उठल- तँ हमरा सभ बूते की कयल हैत?''

-हौ, हम सभ चाहब तँ कि नइं हैत। जेना ओ सभ टिकट लेल पाटी आफिसमे नाक दरड़ि रहल छह तहिना भोट लेल हमरो-तोरो लग नाक दरड़तह, खेखनियां करतह। जँ हम सभ आपसमे मेल राखी आ गामक चौक-चौराहा पर सरेआम घोषणा कऽ दी जे 'सड़क नहि तँ भोट नहि, काज नहि तँ प्रवेश नहि' तँ नेता सभकेँ नाक दरड़ि कऽ एहि सड़ककेँ बनाबहि पड़तनि।'

एतबा कहैत बचकुन बाबू गाम दिस जायवला सड़क पर बढ़ि गेलाह।

मिथिलांचलक सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी, सहरसा, सुपौल, दरभंगा आदि जिलामे निर्माणाधीन सड़कक शिलापट्ट एहि बेरुक चुनावमे मतदाताक दिमाग मे मुद्दा बनिकऽ उभरि रहल अछि आ लोक बुझि रहल अछि जे नेता सभ अपना सुविधा अरजबा लेल शिलापट्ट दऽ कऽ निचेन भऽ जाइत अछि। एहि बेरुका चुनावमे निर्माणाधीन सड़कक ई शिलापट्ट सभ नेता लोकनिक नाकमे कौड़ी बन्हौतनि तकर तैयारी चलि रहल अछि।

(19.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

चुनावि नइं ई खेला छै

कैक वर्षसँ मिथिलाक लोक अपन खेती-बाड़ीसँ कमा कऽ अथवा उद्योग-धंधामे लागि-भिड़ि कऽ अपन गुजर नहि कऽ पबैत अछि। ओहिठामक लोक पंजाब-हरियाणासँ आबयवला मनिऑर्डर पर बकोध्यानम लगौने रहैछ। कारण अपना ओतऽ रौदी-दाहीक करणे खेती-बारी तँ सुभ्यस्त रूपें नहिये भऽ पबैत छैक उद्योगो धंधा नहि रहबाक कारणे अपन श्रम नहि बेचि पबैछ। परिणाम ई होइत छैक जे पूरा परोपट्टाक युवाशक्ति रोजगारक खोजमे अपन घर आंगन छोड़ि बहरा जाइछ आ ओतऽ रहि जाइछ परजीवी वृद्ध, नेना आ स्त्रीगणसमाज। ई परजीवी समाज विकास सँ वंचित गाममे कहुना कऽ दिन कटैत अछि आ अपन बचाव लेल छोटभैया नेता सभक छांहसँ छीह करैत रहैत अछि। ओ जनैत छथि जे हुनकर हक आन खा जाइत छनि, अधिकारक स्वरकेँ दबा देल जाइत छनि। एहि स्थितिमे ओ सभ मोनेमन कूही होइत रहैत छथि आ अपन आक्रोश कखनो कऽ धीयापूतापर उतारैत छथि तँ कखनो ककरोपर।

काल्हिये तँ कंटीर मंडल खोंखिया उठल छलाह अपन दुनू पोतापर जखन ओ सभ खेल करैत हुनक खाटक तिरपेच्छन करैत गाबि रहल छल- चौक-चौराहापर मेला छै- चुनाव नइं ई खेला छै। गली-गलीमे शोर छै- नेतबा सभ भगोड़ छै।

'किए रे, पढ़बे-लिखबे से नइं जे रड़धुम्मस मचौने छें। जो भाग स्कूल, भऽ गेलै बेर। कंटीर खोंखिअयलाह- बड़का पोता नहुंए सँ बाजल-बाबा अहांकेँ बूझल नइं अइं जे चुनावक कारणे स्कूल बंद भऽ गेलै। आब एक्के बेर फगुआक बाद खुजतै। मास्टर साहेब गेलखिन चुनावमे। दोसरो टुनकल-बाबा, यौ, एहि बेर जेबै ने भोट खसबऽ। हमहूं अहां संगे जायब।' कंटीर पड़ले-पड़ले लोहछैत बजलाह- सपरतीव ने दखियनु भोटमे जयताह। रौ, हमरा चलले नइं होइए आ तोहर माय चोर-उचक्काक बीचमे जयतहु नहि। बाप-पित्ती पेट खातिर पंजाबे ओगरने छऽ। जेबें ककरा संगे। चल जो भाग एहिठामसँ ने तँ देबौ दू बेंत एखने।'

नेना कनैत आंगन दिस बढ़य लागल कि कोनटा लागलि कनियांक आंखिमे नोर भरि गेलनि। नेनाकेँ बौंसैत कहलथिन- नइं कानू बाउ, बाबू औताह तँ घुमा देताह। हटनीवाली देयादिनी सभ देखैत रहथिन। कनियां लग सहटैत बजलीह- हे यै कनियां,

बौआकेँ तँ बौंसि देलिऐक, अपना के बौंसत ? पछिलो चुनावमे सोचने रही ने जे दुनू गोटे भोट खसायब मुदा मुझौंसा सब तेना ने स्कूलपर मारापीटी कयलक जे घरेमे नुकायल रहि गेलौं दुनू गोटे। आ एहि बेर तँ सुनै छिऐ जे सभ पाटीक चोर-बनोल सभ एखनेसँ चौक-चौराहापर मेला लगौने छइ। कहांदन बजै जाइ छै जे बूथ कब्जा कइये कऽ रहबे, चाहे जै गो लहास खसइ।'

हटनीवाली जकाँ अनेक स्त्रीगण चुनावक बात सुनि-सुनि एही तरहक गपसप आपसमे कऽ रहलीह अछि। ठीके, चुनावमे ठाम-ठामसँ जेना अपराधी तत्व ठाढ़ भऽ रहल अछि आ गामघरमे अपन-अपन रमचलेबा सभकेँ पीठ ठोकि भोट अंगेजबाक लेल हल्ला-फसाद, मारिपीट करबाक गुरुमंत्र दऽ रहल अछि ताहिसँ गामघरक लोक एखने सँ डेरायल-सहमल अछि। खास कऽ ओहन गाम जाहिठामक युवाशक्ति अपन घर छोड़ि परदेशमे अछि तकर परिजन तँ चुनावी यज्ञमे शामिल भऽ पओताह की नहि से सोचिकऽ एखनेसँ फिरीशान छथि।

(19.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

हम की करबै सरकार....

'टके सेर खाजा, टके सेर भाजा' कहबी आब फेल भऽ गेल अछि। कारण ई कहबी बेजोड़ छल तेँ लोकक मुंह पर चलि अबैत छल। मुदा आब जेना बजार-भाव चलि रहल अछि ताहिमे एकर कोनो मोले नहि। राहरि-मसुरीक दालि होअय कि पेट्रोल-मटिया तेलक आ कि दूधे-पानिक सभ एक्के रेटमे दौड़ैए। जिनीस सभमे ऊंच-नीचक अन्तर ओहिना मेटायल जाइए जेना राजनीतिक दल सभक स्वभाव आ कार्य प्रणालीमे। बेचनिहार की किननिहार दुनूमेसँ ककरो पलखतिये नहि छैक जे एहिपर विचार करय। एकरो कारण छैक। आब विकल्पक जमाना भऽ गेलैए। एकटा नहि भेटय तँ दोसर लिअऽ। दोसर नहि भेटय, तेसर लिअऽ। तेँ देखू- घी बिला गेल, कोनो परवाहि नहि, डालडा लिअऽ। डालडा नहि भेटय, रिफाइन लिअऽ। रिफाइन नहि भेटय, रेपसीड लिअऽ। बजार खुजल अछि, दौड़ा-दौड़ी करैत, पेट भरबाक व्योंत करैत रहू।

गामघर सभठाम यैह चर्चा जे बजारमे लुत्ती किए लागल जाइए ? चीनीक दाम देखू-चुनाव अबिते अकास चढ़ि गेल। मीठ होइतो कड़ु लगैए। एक्के बेर पांचक सिक्का उछालैत 17 सँ 22 टकाक सीकपर बैसि गेल। कोनो बिलाड़ीमे दम नहि जे झपटिकऽ ओकरा नीचा पटकय। गुड़ सेहो चीनीक नीयत देखि ओकर पछोड़ धरबामे अपस्यांत। करिया कक्काकेँ नीक नहि लगलनि। बजारकेँ भजारबाक सभ दिनसँ चसक रहलनि अछि। से चलि देलनि दरभंगा टावरक पांजरमे सटल गुदड़ी बजार। गुड़हट्टा पहुंचैत झबडू सावपर तीर मारलनि- की यौ सावजी, 'चीनी चढ़लइ अकास, गुड़केँ किए बनौने जाइ छिए बिंदास?' सावजी उदास स्वरें बजलाह-

हम की करबै सरकार !

सभकेँ आब एकरे छै दरकार।

करिया कक्का एतबेमे कोना मानितथि। आगां बढ़ि दोसर दोकानपर पहुँचलाह। गुड़क एकटा छोटसन ढेला मुंहमे धरैत, दाम पुछबाक उपक्रम करैते छलाह कि नथुनी साहु बमकैत बाजल-'अहाँ तँ लहेबे कऽ देब करिया बाबू। भरि दिन पौआ-कनमा बेचि कऽ हम बाल-बच्चा पोसै छी। एहीमे हाटक चुंगी आ बजारक रंगदारी सेहो देबऽ

पड़ैए। ऊपरसँ एहि बेर चुनावक मारि सेहो सहऽ पड़ि रहल अछि आ ताहिपरसँ अहाँ सभ जे एना चिखना-पर-चिखना देबऽ लगबै तँ हम कंगाले ने भऽ जायब।'

मुंहमे गुड़क अछैत करिया कक्काकेँ साहूजीक बोल ओलसन लागऽ लगलनि, तैयो स्वरकेँ नरम करैत टोह लेबा लेल पुछिए देलथिन- हाटक चुंगीक बात बुझलियह, रंगदारियोक बात बूझल अछि मुदा ई चुनावक मारि नहि बुझलियह। कने फरिछा कऽ कहह।'

नथुनी साहु फुसफुसाइत बाजल- परसू जे डोमन साहु मारल गेलै से नहि बुझल अछि। कहांदन कोनो नेता ओकरापर ततेक ने चुनावी टैक्स लगा देलकै जे ओ नहि दऽ सकलै। बेचारा पाइ-दू-पाइ जमा कऽ बेटाकेँ दिल्ली पठबऽवला छल पढ़बऽ लेल मुदा अपने ऊपर चलि गेल।'

करिया कक्काकेँ जिनीस सभक दाम किएक बढ़ि रहल छैक, किएक मनुक्ख आ छागर-पाठीक दाम चुनावक समयमे एक्के भऽ जाइत छैक से बजारेमे बुझा गेलनि। हुनका ओहिना मोन छनि जे पछिला चुनाव बेरमे चाहक पत्तीपर बीस टके किलो कोना उछाल आयल रहैक। कहाँदन ऊपरे ऊपरसँ चुनावक खर्चक उठान चाह उद्योगसँ भऽ गेल छलैक आ लोक भफाइते चाहक जिनगीक भाफ सँ जिनगीक थकान दूर करबाक प्रयास करय लागल छल। करिया कक्का ईहो जनैत छथि जे गामघरमे चीनीक मरीजक संख्या दिनदुना राति चौगुन्ना बढ़ि रहल अछि तेँ चुनावी समरकालमे चीनीमे आयल उछालसँ क्यो आहत नहि होयत। चुनावी बयारसँ आक्रान्त बजार-भावकेँ अकानैत ओ निर्णय लैत छथि जे आइसँ ओ नेबोवला नूनगरहे चाह पीताह मुदा चीनीक चुनावी उछालपर गामघरमे एक्कोबेर कल्ला नहि अलगौताह।

(24.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

जेहने नागनाथ, तेहने सांपनाथ

राति मे एक अछार बरखा भेल छलै। ताहिपरसँ पछबा सिहकय लगलै। टुनटुन बाबू भोरमे उठि कऽ जखन बाहर अयलाह तँ दाँत किटकिटाय लगलनि। देहमे थरथरी धऽ लेलकनि। दौड़लाह घूर दिस। खोड़ि कऽ देखलनि तँ आगि पझायल भेटि गेलनि। झट दऽ एक मुट्ठी पोआर दऽ जोरगर फूंक मारलनि। आगि लहकि उठल। देह कने गरमयलनि कि जोरसँ हाक लगौलनि- उठलह नहि हौ बटेसर। आबह-आबह घूर तऽरा।'

घूरक धुआँ बीच लहकैत आगि देखि धीरे-धीरे बटेसर, फूलो, मेघन आ वीरेन्द्र जुमि गेलाह। फूलो तमाकू रगड़ैत काल्हुक गप्प लाड़लनि-'टुनटुन कक्का काल्हि नेताजीकेँ अबैत देखि अहाँ तँ बाध दिस टहलि गेलहुँ फेरमे फंसि गेलहुँ हम। नेताजी कहय लगलाह- फूलो जी एहिबेर गामक झोड़ी-डंटा अहीं सम्हारियौ आ हमर इज्जत बचाऊ। जेना जे कहबै, व्यवस्था भऽ जेतै।' हम कहलियनि नेताजी हम कोन जोगरक छी जे हमरापर एतेक भरोस अछि। कहियनु महाजीकेँ, वैह सभ ठीकठर कऽ देताह।

मेघन घूरमे एक मुट्ठी पोआर झोंकैत टपकलाह-धुरजी, अहूँ बुरिलेल छी। सभ दिन राजनीतियेक गप दैत रहैत छी आ बेर आयल तँ सतवर्ता बनय लगलहुँ। लऽ लितहुँ भार, जैह एहि कर्कीमे किछु हमरो सभकेँ भोग होइत।'

बटेसर धुआँ केँ दोसर दिस साहैत नोरायल आँखिये बातकेँ लोकलनि- एहि बेर हम सब मोन पड़लियनि हुनका जखन ओहि टोलक लोक सटय नहि देलकनि। सुनि लिअऽ बाउ, जँ अहाँलोकनि फंसलहुँ हुनक चारा पर तँ दुहाइत रहब पांच वर्ष ओहिना जेना आइकाल्हि माल जालकेँ सूइ दऽ कऽ दूहल जाइ छै।'

'मर, ईहो कोनो बात भेलै। आयल लक्ष्मीकेँ केओ ठोकरबै छै। ओ बड़ चलाक आ हम सभ बुड़ि। अरे जेना ओ हमरा समकेँ ठकैत अयलाह अछि तहिना हमहूँ सभकेँ ढोढ़ी ढील कऽ दिऐक एहि बेरमे आ भोट देबाकाल आपसमे नेयारि लेब जे की करी। ककरा दिऐक भोट।

–'की यौ टुनटुन कका, की विचार ? वीरेन्द्र तमाकू थुकरैत टुनटुन कक्कासँ राय मंगलनि।

टुनटुन कक्का जे बकर-बकर मुंह तकैत सभक बात सुनि रहल छलाह घूरकेँ कोड़ैत बजलाह- हमरा की, कोई नृप होहु हमें का हानी, चेरी छाड़ि न होबय रानी। हमरा लेल जेहने नागनाथ तेहने सांपनाथ। बावनेसँ चुनाव देखि रहल छी। आन इलाकाक लोक सातु-चूड़ा छोड़ि 'फास्ट फूड आ चिकेन चिल्ली उड़बैए आ हमरा लोकनि डोका-कांकोड़ेपर एखनो माथापच्ची करैत छी। हौ, सालमे छओ मास बान्हपर आ छओ मास गामपर रहैत छी। कहियो ओइ कोलापर घर छाड़ैत छी तँ कहियो ओइ कोलामे मचान पर दिन खेपै छी। के देखबैया अछि। सालमे एकबेर ठीका-पट्टी कऽ लैए। तेँ ई नेताजी जीतथि तैयो यैह गति ओ जीतथि तैयो यैह गति। जँ यैह गति भोगबाक अछि तँ कथी लेल हम अपनाकेँ एहि टोल आ ओहि टोलमे बांटू।

मिथिलामे आइ घूर तऽर बैसल लोक सभ एहने व्यथासँ व्यथित भऽ गप कऽ रहल अछि। ओकरा एखन धरि चुनावक गरमी ओतेक नहि गरमा सकलैक अछि जे ओ घूर छोड़ि मैदानमे कुदि कऽ जाय। ओ देखि चुकल अछि स्वतंत्रताक बादक पचास-पचपन वर्षक समय जाहिमे लोक जवानीक सुख भोगैत वृद्धावस्थामे प्रवेश करैत अछि। मुदा मिथिला जे ने कहियो किशोरवयक अल्हड़ताकेँ गमलक आ ने जवानीक सुख भोगलक। सीता जकाँ शुरूएसँ निर्वासित, उपेक्षित। तेँ ओहिठामक सोच सभ दिनसँ वृद्धावस्थाक जड़तासँ जकड़ल, अपन नेतृत्वसँ दगधल टुनटुन कक्का जकाँ काते-करौटमे दार्शनिक बनल दिन खेपबा लेल विवश रहैछ।

(28.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

तीन तिकट महाविकट

मिथिलामे तीनक बड़ महत्व। शुभक बात होअय तँ पान, माछ आ मखान। कोनो बातक निर्णय करबाक ओहय तँ 'तीन सत्ते सत्त'। कोनो बात पर अड़ि जयबाक शंखनाद करबाक होअय तँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश केँ उतारि लिअऽ। मुदा ई जनितो जे दू सँ तीन नीक भऽ सकैछ, कतहु चलबा काले भट् दऽ लोक बाजि देत– 'तीन तिकट महाविकट'। अर्थात तीन गोटे एक संग नहि जाउ। मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना एंहिठाम सभ दिनसँ रहल अछि तेँ 'तीन तिरहुतिया तेरह पाक'क खिस्सा सभकेँ बुझले छनि। से एही तीनक चक्करमे मिथिलावासी सभ दिनसँ पड़ल रहलाह अछि, भने ओ नेता, नेत आ नियमक बात हो अथवा जीवनक मूलभूत आवश्यकता-रोटी, कपड़ा, मकान'क हो वा बिजली, सड़क, पानिक।

एक दिन गामघरक लोक एकटा समाचार सूनि उछलि पड़ल। समाचारे रहैक उछलबा जोगर, कारण चुनाव माथापर सवार रहैक। एहि समयमे समाचार सभसँ लोक ओहिना जुड़ल रहैए जेना टी.वी. सँ एन्टेना। चुनाव आयोग कहने रहैक जे कोनो प्रत्याशी तखने चुनाव लड़ि सकैए जखन ओ अपन सभ बकियौता चुकाओल जयबाक प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करताह। कहांदन एही बातपर विद्युत विभागक एकटा अधिकारी चुनाव आयोगकेँ सूचना देने छलाह जे बिजलीक बकायाक मदमे मंत्री, विधायक आ आन नेतालोकनिपर 1400 करोड़ टाका बकियौता अछि। जँ ई लोकनि उक्त बकियौता अदाय कऽ देताह तँ शहर की गामघरमे सेहो बिजलीक किरण छिटकय लागत।

से बुझू गामेघरमे ई समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल। लोकक चेहरा दपदप करय लगलै। भेलै ठुट्ठ पड़ल पोलकेँ एहि बेरूका चुनावी शुद्ध जनउ जकाँ संस्कार कराइए देतैक। उद्योग-धंधा उठि बैसत। खेत लहलहा उठत। ई समाचार 'बिजली, सड़क पानि'क तीनक टंटा तोड़ि कऽ रहत, ई जानि लोकक मोनमे हलदिल्ली मचि गेल।

रामा बाबू नोकरकेँ आदेश देलथिन- 'रौ, मधेपुर जइहेँ तँ तीन लीटर किरासन, तीन टा मोमबत्ती आ चोरबत्ती लेल दूइएटा बैटरी लिहें।' किसनाकेँ आश्चर्य भेलै। पांच गैलनक बदला एहिबेर तीने लीटर किरासन किए ? पुछिए देलकनि–

मालिक ई की ? अहाँक घरमे तीन लीटर किरासन ? ई तँ बलू ऊँटक मुंहमे जीरक फोड़न होंयत।'

'धुर, तों की बुझबिही। रे, बूझ जे दुःखक दिन आब गेलौ, गा मल्हार। तोरा नहि पता छउ जे आब गामोघरमे बिजली लगतै ?

'से सुनलिऐ हमहूँ सरकार। मुदा अपने केँ ई समाचार पर विश्वास है।'

'किए ने हैत रौ, तोरा की बुझाइ छौ जे चुनाव आयोग एहिना चुप रहि जेतै। देखै नहि छही जे नेता सभपर कोना चुमकीसँ चाबुक चला रहल छै।

'हम की कही सरकार, छोट मुंह बड़ बात। नेता, नेत आ नियम जाबे ठीक नहि होत ताबे कुच्छो ने होत।'

'से की रौ ?'

'से एहि लेल जे हमरा आउर के तीन तिकट महाविकट' घेरने हय। बलू जावे ई तीनक टंटा नहि छोड़त तावे उसास नहि होत।'

रामा बाबू तखन तँ ओकरा डांटि कऽ मधेपुर विदा कऽ देने रहथिन। मुदा आब जखन कि बिनु बकियौता अदाय कयने नेता सभ चुनाव मैदानमे उतरि गेल अछि तँ छगुन्तामे पड़ल छथि जे आखिर ई कोना संभव भेलै। कोना प्रजातंत्रक सजग प्रहरी चुनाव आयोग चुपचाप बैसि रहल। तावतेमे किसना टटका अखबार दऽ गेल रहनि। रामा बाबूक नजरि एकटा समाचार पर अटकि गेलनि। 'बिहारक अधिकांश नेताकेँ सम्पतिक नामपर किछुओ नहि छनि। ओ लोकनि पत्नीक सम्पतिपर कोनहुना गुजर-बसर कऽ समाज-सेवा करबाक शपथ खयने छथि तेँ बिजलीक बकियौता चुकयबाक झंझटि हुनका सभकेँ नहि भेलनि आ ओ लोकनि सरलता पूर्वक चुनावी वैतरणी पर करबा लेल प्रमाण-पत्र पाबि लेलनि।

रामा बाबू तीन तिकटक रूपमे 'संपत्ति, समाज-सेवा आ शपथ'क अर्थ बुझि गेल छलाह आ संगहि ईहो बुझि गेलाह जे मिथिलाकेँ एखन 'तीन तिकट महा विकट'क टंटा छोड़यवला नहि छैक।

(31.1.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

चलू चलू बहिना हकार पुरइ ले...

किछु लोक कहैत छथि जे चुनाव की आयल-अपहरण उद्योग उठि बैसल, लूट-डकैतीमे एक क्षेत्र दोसराकेँ पछाड़ि रहल अछि तँ चुनावक नामपर चलि रहल रंगदारी टैक्स जजिया करकेँ मात दऽ देलक। मुदा हम तँ देखि रहल छी जे ई चुनाव पावनिक वातावरण बना तेना ने लोकमे उत्साह भरि देलक अछि जे होइए किएक ने एहने वातावरण बनल रहैछ सभ दिन, जाहिमे दुःख-दर्द, चिन्ता-फिकिर बिसरि मगन भेल रही। वेदो-पुराणमे सुनैत छी जे एना देव-पितर पुष्पक विमानसँ अयलाह, तँ ओना लोककेँ दर्शन दऽ कृतार्थ कयलथिन। एना हुनका स्वागत करबा लेल सुन्दरी सभ सोना-चानीक थारमे फूलपात लऽ मार्गमे ओछबैत जाइत छलीह आ देवगण नहुंए-नहुंए चलैत मंचपर शोभायमान होइत श्रद्धालुकेँ संबोधित करैत छलाह। से आइ चुनाव कालमे मिथिलामे ओहने सन दृश्य सभतरि देखबामे आबि रहल अछि। जतय बैलगाड़ी चलबामे हकन्न कनैत अछि ततऽ स्कारपिओ-बोलैरो दौड़ि रहल अछि। जे कहियो रेलगाड़ी नहि देखलनि से पुष्पक विमानसँ अपन-अपन देवाधिदेव पूज्य नेताजीकेँ उतरैत देखि धन्य भऽ रहल छथि। महिला लोकनि सेहो उत्साहित भऽ सभा स्थल दिस जयबा लेल आतुर छथि। मुदा ई नहि बुझू जे ई लोकनि अपना मोने जा रहल छथि हिनका लोकनिकेँ बजाप्ता हकार भेटल छनि। तेँ ई लोकनि ओहिना सजि-संवरि कऽ सभा-स्थल दिस जा रहल छथि जेना टुन्नी दाइक वरकेँ देखबा लेल उताहुल भऽ गबैत जाइत छथि-'चलू-चलू बहिना हकार पुरइ ले।' प्रसन्नताक एकटा आर विशेष कारण छैक। टुन्नी दाइक वरकेँ देखबा लेल आब उपहार सेहो देबऽ पड़ैत छैक मुदा एहि चुनावी हकार पुरबामे नेता लोकनि हिनके लोकनिकेँ स्वयं 'अशर्फी' स्वरूप किछु प्रसाद दैत छथि। तेँ ई लोकनि आपसमे झौंझ करैत प्रसाद पयबा लेल झटकलि सभा दिस जा रहलि छथि।

-'ऐं गै छौड़ी, तों जे एना झखैत चलै छें तँ केना दिन कटतौ गे। हे गै, मिटिंग बलू खतम भऽ जेतौ तऽ उड़नखटोलो ने देखबेँ आ ओ जे कहने छउ जे धूआ गनि के पचास गो टाका देतौ सेहो नइं भेटतउ।'

'है, तऽ तों दौड़ ने। तोँ ने गछलीही गऽ आ पाइयो तोंही लेबही, तऽ हम किए दौड़ि कऽ चलियौ। जेना चलै छियौ तहिना चलबौ।'

'हे गै, हमरा तँ बलू आदत भऽ गेल हें दौड़े के। जै गो नेता औतौ तते बेर हकार दइ छौ तोरा आउर के लऽ कऽ आबेला। नै जयबै तऽ जीवे देतौ सरधुआ फेकना। चुप-चाप चल हाली-हाली। आगूमे हमसब नइं बैसबै तऽ ओकर रक्षा केना हेतइ। हमरे सभके घेरासे ऊ सुरक्षित रहतइ ने।'

'ऐ गे मइयां, तोँ ओकरा सुरक्षा लेल एतना हरान किए छीही। हमर तऽ सुरक्षा कएले नं होइ छउ जे कोढ़िया सभ दिना दानिस लंगोचंगो कयने रहैए।'

'छोड़ ई सभ बात एखनी। अपना आउरके बात आउर छै, ओकरा सभकेँ आउर। ऊ सभ ऊपरकेँ लोक हइ। अपना सभकेँ एही हकारके नामपर कुछ तऽ मिल जाइ छउ, से की कम हउ।'

ठीके उपरका लोक लेल मिथिलाक नारी की नहि कयलनि। एकटा धोबीक असत्य आरोप लगौलाक कारणे सीतासन पत्नीकेँ त्यागि देलनि राम आ सीता चुपचाप पृथ्वीक शरणमे चलि गेलीह। तहिना चुनावी सभाकेँ दमगर बनयबा लेल आइ मिथिलाक नारी अपन सुरक्षाक बात बिसरि नेताजीक सुरक्षा लेल चुनावी सभामे आगां जा कऽ बैसैत छथि। हुनकर स्वागत करबा लेल हकार भेटिते सभास्थल दिस दौड़ि पड़ैत छथि। भने हुनक आर्तनाद-चित्कार नेताजीक कान धरि नहि पहुँचनि। मिथिलाक नारी जनैत छथि जे जनिका-जनिका शक्तिक आवश्यकता होइत छनि हुनक पुकार करैत छथि आ ओ मातृस्वरूपा बनि दौड़ि जाइत छथि मुदा हुनक पुकारपर एक्कोटा बेटा नहि अबैत छनि। बेटाक प्रतिरोधमे ओ कहियो ठाढ़ो नहि होइत छथि अपितु देवस्वरूप नेताजी द्वारा आवाहन करिते हुनक सुरक्षा लेल अपन बेटी, पुतोहु, सखि, बहिनपाकेँ बड़ सहजतापूर्वक कहि उठैत छथि-'चलू-चलू बहिना हकार पुरइ ले।'

(3.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

भविष्यवाणीक चौका – छक्का

चुनाव संग्राम प्रारंभ भऽ गेल अछि। उमेदवारलोकनि सदल-बल मैदानमे कुदि गेल छथि आ अपन-अपन गोटी फिट करबा लेल दरबज्जे-दरबज्जा उठा-बैठकीमे लागल छथि। किछु ठाम हरमुनियां बजबैत मतदाता लोकनि अपन मतदानरूपी राग-अलापकेँ इवीएममे रेकार्डिंगो करबा लेलनि अछि जे आगामी चुनाव घोषणा दिन सँ प्रसारित कयल जाय लागत।

प्रथम बेरक एहि मतदानक महादानकेँ देखि भविष्यवाणीक धर्रोहि लागि गेल अछि। टीवीक विभिन्न चैनेल गिरगिट जकाँ रंग बदलैत भविष्यवाणी पर भविष्यवाणी कऽ रहल अछि। अखबार सभ 'लोकल सब्जी है'क नारा जकाँ ओहिमे तेल मसल्ला मिलाकेँ कोनो दलकेँ जिता रहल अछि तँ ककरो हरा रहल अछि। केओ-केओ तँ भविष्यवाणीकेँ ओहिना बेकछा रहल अछि जेना मैथिल सभ घराड़ीक बंटवारामे राइसँ रत्ती धरिकेँ बेकछा कऽ पंचकेँ बुझबैत छैक। यद्यपि सभ भविष्यवक्ता ई बुझि रहल छथि जे नेतालोकनि जेना राजनीतिक दलकेँ अपन बपौतीक सम्पत्ति बुझि लेलनि अछि तेहना स्थितिमे एहि बेर ककरो बहुमत नहि भेटतनि आ चुनावक बादो ओहिना 'बेचारी सरकार'केँ अपना खुट्टामे बन्हबा लेल आपसमे कटाउझ करबे करताह। ई जनैत जे परिणामसँ मिथिलाक कोनो कल्याण नहि होमऽवला छैक तैयो सभ लोक ज्योतिषीक बाना धऽ लेलक अछि आ अपना-अपना तरहें गणना कऽ चुनाव-परिणामक घोषणा कऽ रहल अछि। खासकऽ विभिन्न टी.वी. चैनल लोकमे ई क्षमता भरि देलक अछि जे सभ व्यक्तिमे ज्योतिषीय एन्टेना लागि गेल अछि। ई सभ देखि कऽ लगैत अछि जे मतगणना करबाक काज लेल चुनाव आयोग फुसिये ने एतेक ताम-झाम आ खर्च करैत अछि। ओकरा एहि भविष्यवाणी सभक औसत निकालि कऽ चुनाव परिणाम घोषित कऽ देबाक चाहिऐक जेना चैनेलवला सभ मतदाताक जातिगत औसत निकालि कऽ चुनाव परिणामक भविष्यवाणी कऽ अपन होशियारी देखा रहल अछि।

एहने सन भविष्यवाणीक चौका-छक्का काल्हि भागलपुरक घंटाघर लग दनादन लागि रहल छल आ हम ज्योतिषाचार्य लोकनिक मुह बकर-बकर देखि रहल छलहुँ।

'अहाँ की जानऽ गेलिऐ जातीय समीकरण। देखियौ, कतबो जाति-जाति के बांटि कऽ भोट पड़लै, हेतै निर्णय दुइये बात पर।'

–दुरजी, अहाँकेँ पते ने अछि, एहि बेर सोझे-सोझ लड़ाइ छैक। जतऽ जकर पलड़ा भारी छै, सैह बाजी मारतै। कहू तँ सीट दर सीट गना दी जे के कतऽसँ जीतत। बाजू छी तैयार।'

'यौ अहाँसभ एहिना अन्हारमे तीर छोड़ैत रहू। एहि बेर ई सभ किछु नहि चलतै। लोक आब आजिज भऽ गेल छै। एहि बेर हम ताल ठोकि कऽ कहि सकत छी जे की होयत। जँ हमर बात सत्य नहि होअय तँ पांच सय की हजार टाका हारय लेल तैयार छी। लगेबै हजार टाकाक शर्त।'

'ई सभ किच्छो नइं हेतै यौ। एहि बेर ककरो सरकार नइं बनतै से जानि लिअउ। ई नेतबा सभ अपन चालि थोड़बे छोड़तै। ओकरा सभकेँ की हमरा अहाँक चिन्ता छैक जे मिलि-जुलि सरकार चलाओत। आपसे मे तेना ने लड़त जे कोनो निर्णय नइ हेतै आ अन्ततः एतउ राष्ट्रपति शासन लागत। जँ से नहि होअय तँ हमरा नाम पर कुकुर पोसि लेब।'

मिथिलाक लोक, जे सभ दिन भाग्य भरोसे दिन खेपि रहल अछि से एहू चुनावक क्षण मे भविष्यवाणीये कऽ समय खेपि रहल अछि। एहू समयमे ओकरा ई बोध नहि भऽ रहल छैक जे अपन भविष्यकेँ सुधारबा लेल नीक उमेदवारकेँ चुनत, अपन हक आ अधिकार पयबा लेल राजनीतिक दलक नेताकेँ गिरगिटसँ मनुक्ख बनबा लेल विवश करत। नैयायिक आ मीमांसक धरतीक लोक अपना लेल मीमांसा करैत न्याय पयबा लेल प्रयास करत से नहि कऽ टी.वी. चैनेल जकाँ गिरगिट बनल भविष्यवाणी-दर-भविष्यवाणी कऽ दिन खेपि रहल अछि।

(6.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

बड़ अजगुत देखल...

महाकवि विद्यापति जखन गौराक आंगन गेलाह तँ आश्चर्यचकित भऽ उठलाह। ओहिठाम सभ किछु-विचित्र-विचित्र छल। एक दिस आंगनमे बाघ-सिंह हुल-हुल कऽ रहल छल तँ दोसर दिस बड़दो छलनि से बानवीर, खेत जोतऽ योग्य नहि। फेर दोसर दिस तकलनि तँ गौराक दुनू नेनाक करतब देखि अचंभित भऽ गेलाह। गणेश सन लम्बोदर मूसक सवारी कऽ रहल छलाह तँ कार्तिक सन बुद्धिमान मोरपर बैसि उड़बाक तैयारी करैत। एतबेमे हुनका स्मरण अयलनि जे ओ तँ गौरासँ किछु पैंच-पालट मांगय अयलाह अछि। से ध्यान अबितहि घर-आंगन दिस ध्यान देलनि तँ सम्पत्तिक नामपर भंगघोटना टा देखबामे अयलनि। ओ उदास भऽ उठलाह। मनक मनोरथ मोनेमे रहि गेलनि आ बाजि उठलाह– 'बड़ अजगुत देखल तोर अंगना। गौरा तोर अंगना।' मुदा तुरत भांगक निसामे मत्त महादेवपर ध्यान गेलनि तँ सभ अजगुत दृश्य बिसरि गेलाह आ हुनक पयर छानि गाबि उठलाह 'कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ।' से चुनाव अबितहि जखन नेतालोकनि मिथिलाक आंगनमे हुल-हुल करय लगैत छथि तँ विद्यापति जकाँ ओहिठामक लोक अकचका जाइत अछि। मुदा नेता लोकनि निश्चिन्त रहैत छथि। ओ जनैत छथि जे एहिठामक लोककेँ ने खेती छैक ने पथाड़ी। बानवीर सन बड़दक भरोसे ओ अपने किछु कइयो ने सकैत अछि। एहिठामक किछु बेटा लंबोदर जकाँ 'खो मंगला पड़ल रह'मे विश्वास करैत छैक तँ किछु बेटा मयूरपर बैसि फुर्र सँ एहिठामसँ उड़ि जाइत अछि। शेष बचल लोक महादेव जकाँ भांग पीबि मस्त रहैछ। ने कोनो अधिकार पयबाक सख आ ने भविष्यक चिन्ता। स्वभावो महादेवे जकाँ सहजेमे ढरि जायवला। तेँ एहू बेरक चुनावमे सभ दलक नेताजी लोकनि मिथिलाक घर आंगनमे एकटा याचक जकाँ उपस्थित भऽ गेलाह अछि आ अपन गोटी लाल करबा लेल अपन-अपन महादेवकेँ रिझयबाक प्रयासमे लागल छथि।

ठीके सम्पूर्ण मिथिलाक मतदाता आइ महादेव बनल छथि जनिका रिझयबाक प्रयास एना भऽ रहल अछि–

'सत्ते कहैत छी मंडलजी, एहिबेर नैया पर लगा दिअऽ। बाढ़िक विभीषिकासँ पूरा परोपट्टाकेँ बचयबा लेल हमर दल एहि बेर सभ प्रकारक सरंजाम करत। एक मौका आर दियौक। अहां भोलानाथ छी। अहाँ बिनु हमर उद्धार नहि होयत।'

'हे यौ मिसरजी, बिनु अहाँक आशीर्वादक पातो डोललइए। जावे हमरा माथपर हाथ नहि देब, हम एहिठामसँ जाइवला नहि छी। अहाँ अयाचीक वंशज छी, अहां सन संतोषी के अछि पृथ्वीपर।'

'सरकार अहींक छत्रछायामे सभ दिनसँ हमर पुरुखा जीवन-यापन कयलनि। अहाँक दान महादान कहबैए। अहां तँ दानवीर कर्णो सँ पैघ छी। एक बेर सेवकके आर अवसर दियौ सरकार।'

सम्पूर्ण मिथिलामे नेतालोकनि वोट मंगबा लेल आइ एहिना निधोख भऽ हुल-हुल कऽ रहल छथि। मुदा एहिठामक बेटा खाहे तँ खो मंगला पड़ल रह वला स्थितिमे निश्चिन्त छथि आ ने तँ 'उड़ चिड़ैया फुर्र' वला फकराकेँ चरितार्थ कऽ रहल छथि। किनको मिथिलाक विलटल स्थितिकेँ सम्हारबा लेल एहि समयमे नेता सभकेँ सैंतबाक पलखति नहि छनि। मिथिलाक दुःस्थिति जे छओ सय वर्ष पूर्व विद्यापति देखि कहने छलाह-बड़ अजगुत देखल तोर अंगना-ताहूसँ बदतर स्थिति आइ बनल अछि मुदा मिथिलावासीकेँ कोनो अजगुत दृश्य नहि देखाइ पड़ि रहल छनि, ओ लोकनि महादेव सदृश नेतालोकनिक मनुहार पर मुग्ध भऽ हाथ उठा आशीर्वाद देबा लेल तैयार भऽ रहल छथि।

(9.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

नेताजीक फरमान

राजनीतिक अपराधीकरण सँ समाज ओहिना घिना गेल अछि जेना कारपोरेशनक हड़ताल सँ पूरा शहर बजबजा उठैत अछि। गन्हाइत रास्ता दने जायवला लोक नाक बंद कऽ चलि जाइत अछि मुदा राजनीतिमे अपराध तेना ने पैसि कऽ घुलि-मिलि गेल अछि जे ओकरा फराक करब असंभव। कारण राजनीतिमे आब हंस सदृश नेता छथिहे ने जे दूधक दूध आ पानिक पानि अलग कऽ देथु। तेँ ई राजनीति कतहु व्यापारक वस्तु भऽ गेल अछि तँ कतहु उद्योगक। कतहु सौतिनक रूप धऽ रहल अछि तँ कतहु देआदक। कतहु अपहरणक रस्ता देखबैत अछि तँ कतहु हत्याक। कहबाक अभिप्राय ई जे कखनो सत्ताक आराम कुर्सी पर बैसबैत अछि तँ कखनो जहलक हवा सेहो खोअबैत अछि आ कखनो काल तँ ईश्वरक शरणमे बिन काहि कटने पठा दैत अछि। मुदा जियऽबैत, डुबबैत तेहन मृगतृष्णा सन सोझांमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाइछ जे आब बेसी लोक भांग, गांजा, चरस, ताड़ी-दारूक निसां छोड़ि एकरे निसांमे मस्त भेल रहैए। तेँ आइ जतऽ देखब ततऽ ओकरे माथ पर चढ़ि कऽ बजैत देखब। घरोमे वैह, मंदिरोमे वैह, आफिस आ खेलक मैदानोमे वैह। एते धरि जे समाज आ सम्पूर्ण देशमे वैह अपना सिक्का जमौने अछि। हँ, एकटा परिवर्तन भेल अछि राजनीति मे। से ई जे समाज सेवा सँ संन्यास लऽ ई पूर्ण रूपें समाजसँ उपरक वस्तु भऽ गेल अछि।

मुदा जेँ कि किछु लोक एकर निसांक कुपरिणाम देखलक अछि तेँ एहिसँ घबड़ा रहल अछि। ओकरा शंका छैक जे राजनीतिक निसां ओकर घर परिवार केँ डूबा देतैक। ओकरा ईहो शंका छैक जे एहि बेरक चुनावी कुंभमे जीतत क्यो, हारत क्यो मुदा अपटी खेत मे मारल जेतै ओकर सांय आ बेटा। जेना-जेना चुनावी ज्वारि बढ़ल जा रहल अछि तेना- तेना कतेको परिवारक स्त्रीगण गाम घरमे त्राहि-कृष्ण, त्राहि-कृष्ण कऽ रहल छथि। ओ कतबो अपन सांय-बेटाकेँ एहि जनमारा कुंभमे जयबासँ रोकि रहल छथि मुदा राजनीतिक ककहरा सीखि अपराधी बनल एहि कोटिक निसेबाज हुनका धक्का दैत बहरा जाइत छथि।

'हे यौ, हम पैर पकड़ैत छी यौ, नइं जाउ बूथ पर। ओतऽ मारिते रास पुलिस छै! अहाँकेँ पकड़ि लेत। हम सभ बेलल्ला...।

''चुप्प भेले कि नइं, करबे तोँ नाटक। हमरा के की बिगाड़ि लेत ? नेताजीक फरमान छै। जे हेतै देखल जेतै।''

''नइं यौ, हमरा नइं चाही टाका-पैसा, नइं चाही साड़ी-कपड़ा। यौ, एइ बेर किदन-कहांदन सुनै छिऐ।

कहांदन भोट लूटऽ वलाकें बड़ डेंगबै छै। गोलियो चलबऽमे कोनो धाख नइं करै छै, पुलिसबा सभ। हे एइ दूधमुंहाक सप्पत अहांकें नइं जाउ यौ।''

ओ घओना करिते रहि गेल आ ओकर घरवला ओकरा धक्का दैत घर सँ बहरा गेल। नेताजीक फरमान ओकरा माथ पर सवार रहैक, चुनावक निसां बोखार बनि लागल छलैक। से हम देखि रहल छी जे एहि प्रकारक चुनावी निसांमे गामघरक अनेक युवक मत्त भेल अपन घर-परिवारक चिन्ता छोड़ि अपन जान-प्राण हाथमे नेने बूथ पर जयबा लेल उताहुल अछि। जँ कदाचित राजनीतिक एहि अपराधीक खेलमे शामिल नहि होयबाक क्यो परामर्शो दैत छैक तँ ओकरा एकोरत्ती नहि सोहाइत छैक। आखिर पसिन्दो किएक होयतै ? जतऽ उचित बोनिपर मजदूरियो नहि भेटैत हो, जतऽ पसेनो बहौला पर खेतीक सुविधा नहि भेटै, पढ़ला-लिखलाक बादो चाकरी नइं भेटै, ओतऽ जँ चुनावक नाम पर, बूथ लूटबाक नाम पर मुंह मांगल इफरात टाका भेटै, नेतासभ लेल टाका जुटयबाक लेल अपहरणक एवजमे नेता पदक संग-संग लाखो टाकाक पुरस्कार भेटै, तँ जकरा बाहिमे जोर छैक से किएक ने एहि 'राजनीति'क निसां करत जे गांजा, भांग, ताड़ी-दारूक निसांमे मस्त भऽ अपन स्वास्थ्य खराब करत!

(12.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

काज ने धंधा, नौ रोटी बंधा

गामघरमे बतकुट्टनि करैत जखन क्यो ई बाजि उठैत अछि जे मिथिलामे विकास नहि भेल अछि तँ ठीठर कक्का भभाकऽ हँसि दैत छथि आ उत्तरोत्तर भऽ रहल विकासक कीर्तिमानकें तेना ने बेकछबैत छथि जे सभक सिट्टी-पिट्टी गुम भऽ जाइत छैक। परसू खन एहन संयोग भेलै जे दिन भरिमे गाममे चारि पाटीक उम्मेदवार बेरा-बेरी सदल-बल अयलाह आ गामक विकास संबंधी तेना ने सपना देखौलनि जे गौआं सभ माति गेल। स्कूल भवन बनि जायत। बाढ़िक स्थायी निदान बुझू भइये गेल अछि। किसानकें पांच वर्षक टैक्सक माफी कयल जयतनि। बुझू जे जे नहि भेल आ भऽ सकल आइ धरि, से एहि चुनावक बाद कऽ देल जायत।

सौंसे गामक लोक आश्वासनक चारामे तेना ने फंसि गेल जे ककरा भोट दी से निर्णय लेबऽमे असोकर्य होमऽ लागल। कारण सभक आश्वासन तेहन रहैक जे ओकरा बारब उचित नहि लगैक। सभ अपना-अपना स्तरसँ माथापच्ची कऽ रहल छल। दोसर दिस एहि सभसँ निरपेक्ष भऽ ठीठर कक्का संध्याकाल अपन दलानपर बैसल जौड़ बांटि रहल छलाह। काल्हि वोट रहैक मुदा हुनका लेल एहि चुनावी उत्सवक कोनो महत्व नहि रहनि। कारण ओ देखैत आबि रहल छलाह जे कोना ई प्रजातंत्र शनैः शनैः भीड़तंत्र, भ्रष्टाचारतंत्र, परिवारवादतंत्र आ अन्ततः हिंसातंत्रकें अपनबैत आब मूर्खतंत्रक रूपमे पूर्ण रूपे स्वतंत्र भऽ गेल अछि। जेना कनही गायक भिन्ने बथान होइत छैक, तहिना सामाजिक सोच, प्रशासनिक व्यवस्था आ व्यक्तिगत आचार-विचारमे कोनो तालमेल नहि रहि गेल अछि। आ आब ओकरा पटरीपर आनब ओहिना कठिन भऽ गेल अछि जेना राजनीतिकें सामाजिक जीवनसँ फराक करब। ठीठर कक्का यैह सब सोचिये रहल छलाह कि जुम्मन मियां सड़कपरसँ हाक दैत बजलाह-

का ठीठर भाइ, तू हियां रस्सी बांट रहे हो आ पूरा का पूरा गांव का करे-का नहीं, से सोच-सोच के मरा जा रहा है।'

'से की भेलइ हौ जुम्मन, जे गाम आइ जागल अछि। ऐ गामक रीतिये छैक-'काज ने धंधा, नौ रोटी बंधा'। प्रेमसँ खाइ जा आ मौज करइ जा।'

'छोड़ो भाइ मजाक, ई कहो जे काल्हि किसको वोट दिया जाय। सबके

आश्वासने ऐसा है कि दिमागे काम नहीं कर रहा है। अब तोंही राय दो।'

ठीठर कका भभाकऽ हँसलाह आ जौड़क मुहठीपर बन्हन दैत बहलाह- हौ हमरासँ की पूछैत छह। एहि गाममे कमिये की छैक? कोसी मइयाक कृपासँ खेती-पथाड़ी सँ निश्चिन्ते छी। उद्योग धंधा बैसायब से सट्ठे नहि अछि। रहल गामक विकासक बात तँ बुझि लैह जे हमरा ने हेमा मालिनीक गाल सन सड़क आ ने विद्यालये भवन चाही। कारण गर्मी मे धुरा आ बरसात मे मक्खन सन कादोवला स्वाद तँ नहिये दऽ सकत नेताजी वला सड़क जे ओहि लेल सपना देखी। गुरुजी सभकेँ सरकारी काजसँ पलखतिये नहि छनि तँ विद्यालय भवन लऽकऽ की करब। घरमे रहत धीयापूता तँ अबण्ड नहि बनत। रहल टैक्सक बात, तँ ओ हम कतऽसँ दऽ सकबनि। हम तँ चाहैत छी जे टैक्सक असूली सरकार अवस्से करय। जे नहि दऽ सकैक तकरा जहल पठाबय। कारण एहूमे नफे-नफा छैक। ओहू ठाम निश्चिन्तिये रहतैक 'काज ने धंधा, नौ रोटी बंधा।' हौ, हम तँ चाहैत छी जे सरकार हमरा जहले पठा दिअय जे एहि जौड़ बटबाक काजोसँ फारकति पाबी।'

'तऽ का करें हम सभ, से तऽ बताओ।' जुम्मन फेर पुछलनि।

'हौ हम ततेक ने जौड़ बाँटि कऽ राखि देने छियऽ जे हम कदाचित जहलो चलि गेलियह तँ तों सब एहिसँ बहत्तरा समाज के बान्हि सकबह आ जँ नहि बान्हि सकबह तँ एहिना भरमाइत रहबऽ।'

ई कहैत ठीठर कक्का फेर भभाकऽ हँसि पड़लाह। ठीके ठीठर कक्का जकाँ हम सभ अपन काजमे लागल रहितहुँ तँ वोट देबाकाल एना ने अनिणर्यक स्थिति मे रहितहुँ आ ने मिथिलाक एहन स्थिति रहैत। जौड़क अछैत हम सभ अपन नेताकेँ बान्हि नहि सकलहुँ तँ ठीठर कक्का हंसबे ने करताह!

(15.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

कमीशनक कमाल

कमीशनक बजार आब तेहन ने तेज भऽ गेल छैक जे सभठाम ओकरे चलती छैक। जमीन-जालक बिक्रीक बात होअय की कोनो वस्तु-जातक, स्वास्थ्य-जाँचक प्रश्न होअय कि पैरवी-मोकदमाक, जतऽ देखू ततऽ एकरे बात। पहिने ई ठीकेदारी आ खरीदारीमे विराजैत छल मुदा आब तँ एकर भागीदारी पोखरि सँ खत्ताक कारबार धरि आ राजनीतिसँ सत्ताक दरबार धरि भऽ गेल अछि। पहिने ई एकतरफे चलैत छल मुदा एहिबेर रेलवे जकाँ 'अप-डाउन' दुनू कयलक। पहिने 'डाउने' टा चलैत छलैक। धन्य पाटीक ठेकनगर नेतालोकनि जे 'कमीशन-प्रथा'केँ राजनीतियोमे 'अप-डाउन' दुनूमे चलाकऽ जनता जनार्दनकेँ देखा देलथिन जे समाजवाद की होइत छैक।

गामघरक लोक एहीमे प्रसन्न जे चल भाइ हम तँ दुहाइते छलहुँ एहि कमीशनक चक्करमे, एहि बेर हमर नेताजी सेहो पड़लाह। आब बुझथुन जे जनताक मुह किएक चोकटल रहैत छैक अरबो खरबक धन अयलाक बाद। से कमीशनसँ त्रस्त गामघरक लोक अपने आँखिये देखलक-पढ़लक कमीशनबाजीक ई खेल-टिकट बंटवारासँ लऽ कऽ भोट खसयबा धरि। नेताजी, जे एही कमीशनक बलें की-की ने अरजने छथि से एक्के चुनावमे कमीशन दैत-दैत तेना चोकटि-हहरि गेलाह जे मतदान दिन अबैत-अबैत पूराक पूरा ओहिना सिसोहा गेलाह जेना कुसियारक रस बेचऽवला रस गाड़ि कुसियारक गति कऽ दैत छैक।

एही बातपर काल्हि भोट पड़लाक बाद ड्योढ़क मास्टर साहेब ओतऽ जमिकऽ गपाष्टक चलि रहल छल-

'रमेश्वर भाइ, हद्द भऽ गेल एहि बेरक चुनावमे। नेता सभ कंगाल भऽ गेल आ पाटी सभ मालामाल।'

'से कोना हौ। नेताजी कोना कंगाल होयताह! ककरो बहाली होउक की बदली, कोनो प्रकारक पैरवी होउक की पैगाम। सभमे तँ कमीशन बान्हले रहैत छनि आ जहियासँ विकास-काजक कोटा भेटलनि अछि तहियासँ 'अन धन लक्ष्मी घर आउ' हुनके पर छजै छनि। एहनमे ओ की कंगाल होयताह हमरा सभ लेल भने जंजाल भऽ गेल होथु।'

'एह तोहूँ की बजैत छह। यैह कमीशन तँ बेचारेकेँ जंजाल भऽ गेलनि। तँ टिकट देबा बेरमे पाटी 50 लाख चुकरा लेलकनि। गड़ल धन उपारि जेना-तेना इज्जत बचौलनि।'

'ओ हो-हो। की होयतनि हुनका एहि सभसँ।

एकसँ एक्कैस करऽवला छथि।'

'धुर बताह, उपरे टा असूली होइतनि तखन ने। एहि बेर बुझऽ जे गामोक लोक नहि छोड़लकनि। हुनकर वैह परि भेलनि जेना बांसुरीवलाकेँ भेल रहैक। दुनू दिससँ गेलाह।'

'तों की बुझैत छह जे ओ लोककेँ किछु देनहो होयथिन'।

'हौ, देलथिन की एना-ओना। एहिबेर अपन गति की होयतनि तकर आभास किछु-किछु छनि तँ जे जेना-जेना कहैत गेलनि तेना-तेना चुकरैत गेलाह।'

'अच्छा ई छोड़ऽ, हाल कहऽ जे की छनि।'

'हाल की रहतनि। जखन पाटिये हुनका मुल्हा बुझि मुड़ि लेलकनि तँ लोक तँ सहजे मैदानमे रहैत छैक। आ तों जनैत नहि छहक जे मुल्हा केयो अपन नीक लेल तकैत अछि की ओकर भलाइ लेल।'

से ठीके एहि बेर चुनावक पूर्वे जखन पाटी सभकेँ ई बुझा गेलैक जे एहि बेर जनता हमर 'मुल्हा' नहि बनि सकत तँ ओ अपन-अपन उमेदवारकेँ, 'मुल्हा' बना सिसोहि लेलक। आखिर ओकरा एहि चुनावक बाद फेर लगले चुनाव लड़बाक छैक कि नहि। आब सोचथु नेताजी जे ओ 'वन वे ट्रैफिक' जकाँ कमीशनक बजार एते दिन किएक चलबैत रहलाह ? जँ रेलवे जकाँ 'अप-डाउन' दुनू चलौने रहितथि तँ ओहो ने जनताकेँ छाती ठोकि कहितथिन जे अहाँसँ हमर चैती-करारी अछि, चुनावमे हमरा जितबैए पड़त।

(18.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

सुकर्मे नाम की कुकर्मे नाम

कहबी छैक 'सुकर्मे नाम की कुकर्मे नाम।' अपन माटि पानि कहियो गौतम, कहियो महावीर तँ कहियो विद्यापति, राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, दिनकर आदि केँ पाबि गौरवान्वित होइत छल। मुदा एहिठामक राजनीति तेहन ने पलटा खयलक जे सुकर्मे नामकेँ बिसरि कुकर्मे नामक पतक्खाकेँ सौंसे विश्वमे ओहिना फहरा देलक अछि जेना फिल्मी अभिनेता सभ कोनो सिनेमामे सहजहि फहरा दैत अछि। से बुझू ई कुकर्मक गाड़ी पर सवार भऽ किछु फिल्मी अभिनेता सभ आइकाल्हि एहूठामक धरती पर हड़बोंग मचौने छथि। नेता लोकनिकेँ राताराती 'हिट' बनयबा लेल गामघरसँ लऽकऽ शहर धरिमे जनताकेँ 'फिट' करबा लेल तिरपेच्छन कऽ रहल छथि। लोक सोचि रहल अछि से आखिर ई बम्बइया अभिनेता सभ किएक एना बेहाल भेल छथि। की ताक हेर करयमे लागल छथि। किएक तँ ई लोकनि राजनीतिसँ ओहिना सम्बन्ध रखैत छथि जेना कोनो पैघ व्यवसायी आयकर बचबऽ लेल अधिकारी सभसँ। नेता लोकनिक दौड़-बरहा तँ लोककेँ बुझबामे अबैत छैक जे ओ अपन 'सु' आ अनकर 'कु' केँ जगजियार करय लेल अबैत छथि मुदा जे कहियो हीरो न० वन छलाह आब जीरो छथि, जे कहियो सभक स्वप्न सुंदरी छलीह- आब कोनो पाटीक संतरी छथि, सन सन अनेक अभिनेता-अभिनेत्री आखिर बिहारेमे किए अपस्यांत भऽ दौड़ लगा रहल छथि ? ई रहस्य बनल छल। गामघरक युवक सभ एहि रहस्यक पता लगयबा लेल सभक सभामे बेस संख्यामे जमा भऽ रहल छल। सभक अपन अपन राय रहैक–

'की रौ, दिलीप, ई तँ तोरोसँ गेल छौ रौ। दस पांतीक भाषण मे दस बेर उनटा सुनटा बजै छै। एहिसँ नीक तँ तोंही अन्हार-जंगलमे स्टेज पर खेलायल रहें।

'तोहूँ खूब छें। बुझइ छीही किछु नइं आ टीपऽ लगइ छें। रे देखलही नइं जे स्टेज पर बाजऽसँ पहिने नेताजी ओकरा कानमे किछु खुसुर-फुसर कयलथिन।'

'तोहर कहबाक की अभिप्राय छौ?'

'धुर बुड़ि, नेताजी ओकरा जेना निर्देशक बतबै छै तेना किछु बतौलथिन आ सैह बेचारा बजलै। मुदा जेँ कि ओकरा रिहर्सल नहि कराओल गेल रहैक तँ ओ

बेर-बेर गड़बड़ा जाइ। ओ आब बुझलिऐ। तेँ परसू ओ सुन्दरी गड़बड़ा गेल छलिह बजबा काल। आयल छलै जकर विरोध करऽ ओकरे प्रशंसा कऽ कऽ चल गेलै।

'जखन ई सभ एहिना उनट-बनट बजतै तँ उमेदवारकेँ की लाभ हेतै। ओकरा तँ भुस्सेथरि ने बेसौतै। आ कि नहि ?'

दुनू आपसमे एहिना बतिआइत करिया कक्का लग पहुंचल जे बड़े मोनसँ हीरो नम्बर वनक भाषण सुनि रहल छलाह।

'की यौ करिया कक्का ई हीरो तँ नेताजी केँ लहैब कऽ देतनि। बाजऽकें किछु बजै छै किछु।'

'तोहूं सभ हद्द कयने छेँ। रौ, ओ बाजऽ थोड़े अयलैए। ओऽ तँ जेना नेताजी एक तीर मे दू शिकार कऽ रहल छथुन तहिना एक तीर मे दू शिकार करय आयल अछि।'

'से की कक्का'- दुनू एक्के स्वर मे बाजि उठल।

'हौ ओकरा सभकेँ पता लागि गेल छै जे बिहार सन गरीब राज्यमे सभसँ बेसी पाइ राजनीति मे खर्च होइ छै। ओकरा जंतेक टाका एतऽ भेटै छै तते सिनेमामे आब नहि भेटै छै। ई भेलै एक बात। दोसर बात ई जे बिहारक लोक आब राजनीतिये टा बुझै छै, आर किछु नहि। तेँ राजनीतिक बात जतऽ होइ छै ततऽ लाखो जुटि जाइ छै। ओहो दर्शक देखि प्रसन्न, नेताजी उपस्थिति देखि प्रसन्न। हुनको करिया धन टहलै छनि आ हीरोकेँ सेहो करिया धनक आमदनी बनल रहैत छैक। दुनू प्रसन्न।'

हम आ तों....। करिया कक्का किछु बजैत बजैत चुप्प भऽ गेलाह। दुनू युवक पुन: टोकलक। अहाँ किछु कहऽ चाहैत छलिऐक कक्का।'

'हौ, तोरा सन-सन युवकक अछैत कहियो लुटिहारा सभ भाषण दिअय, कहियो अपहर्ता सभ भाषण दिअय, कहियो नचनिया-बजनिया भाषण दिअय तँ कहियो हीरो-हीरोइन। बेरा बेरी एहिठामक धन हँसोथि लऽ जाय। आ हम सभ लाखक लाख संख्या मे एहिना जुटैत रही तँ की बाजब ? जखन कुकर्मे मोन जुड़ा जाय तँ सुकर्मक चर्चा कयलेसँ की?'

(21.2.2005 दैनिक हिन्दुस्तान)

नाम : **शरदिन्दु कुमार चौधरी**

पिता : स्व० सुधांशु 'शेखर' चौधरी

जन्म : 7.10.1956, मिश्रटोला
दरभंगा, बिहार

शिक्षा : एम.ए. (राजनीतिशास्त्र)
पटना विश्वविद्यालय, पटना

वृति : पत्रकारिता
1981-84 मिथिला मिहिर साप्ताहिक
1984-86 मिथिला मिहिर दैनिक
1987-89 मिथिला मिहिर मासिक
1995-2002 आर्यावर्त (हिन्दी दैनिक) फीचर सम्पादक
सम्प्रति 'समय-साल' मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक तथा हिन्दी एवं मैथिलीमे लेखन।
शेखर प्रकाशन (मुद्रक– प्रकाशक) एवं मैथिली पोथी विक्रय व्यवस्थाक संचालक

प्रकाशित कृति : जँ हम जनितहुँ (व्यंग्य संग्रह)
साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी (सम्पादन)
अभिमत (हिन्दी) सम्पादन
मैथिली पत्रकारिताक सय वर्ष (शीघ्र प्रकाश्य)
हिन्दी एवं मैथिलीमे सैकड़ो रचना प्रकाशित
20सँ बेसी स्मारिकाक सम्पादन